વૈદિક જ્યોતિષ સંસ્થાન (રજી.)

Reg. No. Bombay Public Trust Act
Vide Registration No. E-26475 (Mumbai)

80G - Registration No. AABTV2655BF20228

121/44-D, Vishwakunj CHS., Sector-1, Charkop, Kandivali (W),
Mumbai - 400 067. • www.vedicjyotishsansthanmumbai.com

Email : vjtvv1@gmail.com

ગુરુ પૂર્ણિમા મહોત્સવ

Guru Purnima Mahotsav

SUNDAY 17TH JULY 2022

VEDIC JYOTISH SANSTHAN (REGD.)

Classes in Gujrati & Hindi Medium

Our Centers : Borivali (Sat.) • Malad (Sun.) • Borivali (Mon.)

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

Acharya Ashokji
President - Hon. Trustee
(Jyotishalankar)

Harilal Malde
Hon. Principal

Varsha Raval
Hon. Vice Principal

Jayesh Waghela
Hon. Lecturer

Pradip Joshi
Hon. Lecturer

Nitin I. Bhatt
Hon. Lecturer

Tejas Jain
Hon. Lecturer

Pramila Panchal
Hon. Lecturer

Priti Thakar
Hon. Lecturer

Dr. Himanshu Vyas
Hon. Lecturer

Vivek Shah
Hon. Lecturer

Rupal Damania
Hon. Lecturer

सरस्वती स्तुति मंत्र

या कुन्देन्दु-तुषारहार-धवला या शुभ्र-वस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमन्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युत-शंकर-प्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।१।।

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिमयीमक्षमालां दधाना
हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण ।
भासा कुन्देन्दु-शंखस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना
सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना ।।२।।

आशासु राशी भवदंगवल्लि
भासैव दासीकृत-दुग्धसिन्धुम् ।
मन्दस्मितैर्निन्दित-शारदेन्दुं
वन्देऽरविन्दासन-सुन्दरि त्वाम् ।।३।।

शारदा शारदाम्बोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ।।४।।

सरस्वतीं च तां नौमि वागाधिष्ठातृ-देवताम् ।
देवत्वं प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः ।।५।।

पातु नो निकषग्रावा मतिहेम्नः सरस्वती ।
प्राज्ञेतरपरिच्छेदं वचसैव करोति या ।।६।।

शुद्धां ब्रह्मविचारसारपरमा-माद्यां जगव्द्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्पाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।।७।।

वीणाधरे विपुलमंगलदानशीले
भक्तार्तिनाशिनि विरिंचिहरीशवन्द्ये ।
कीर्तिप्रदेऽखिलमनोरथदे महार्हे
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ।।८।।

श्वेताब्जपूर्ण-विमलासन-संस्थिते हे
श्वेताम्बरावृतमनोहरमंजुगात्रे ।
उद्यन्मनोज्ञ-सितपंकजमंजुलास्ये
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ।।९।।

मातस्त्वदीय-पदपंकज-भक्तियुक्ता
ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय ।
ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण
भूवह्नि-वायु-गगनाम्बु-विनिर्मितेन ।।१०।।

मोहान्धकार-भरिते हृदये मदीये
मातः सदैव कुरु वासमुदारभावे ।
स्वीयाखिलावयव-निर्मलसुप्रभाभिः
शीघ्रं विनाशय मनोगतमन्धकारम् ।।११।।

ब्रह्मा जगत् सृजति पालयतीन्दिरेशः
शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावैः ।
न स्यात्कृपा यदि तव प्रकटप्रभावे
न स्युः कथंचिदपि ते निजकार्यदक्षाः ।।१२।।

लक्ष्मिर्मेधा धरा पुष्टिर्गौरी तृष्टिः प्रभा धृतिः।
एताभिः पाहि तनुभिरष्टभिर्मां सरस्वती ।।१३।।

सरसवत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः
वेद-वेदान्त-वेदांग-विद्यास्थानेभ्य एव च ।।१४।।

सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने ।
विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोस्तु ते ।।१५।।

यदक्षर-पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ।।१६।।

।। इति श्रीसरस्वती स्तोत्रं सम्पूर्ण ।।

"गुरु : शिष्य का आदर्शवाद"

ॐ गुरुदेवो गुरुधर्मो गुरुर्निष्ठा परं तपः ।
गुरोः परतरं नास्ति तत्वम् गुरोः परम् ।।

कृतज्ञता से जिसका नाम लेने से गौरव का अनुभव हो, जिनकी अनुकंपा से साष्टांग दंडवत प्रणाम करने का मन करे और जिनके एहसानों का कर्ज कभी भी न चुका सकेंगें - वह नाम है सद्गुरु। आषाढ़ी पूर्णिमा सभी शिष्यों के लिए अपने गुरु के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति दर्शाने का दिन है। गुरुपूर्णिमा के दिन हजारों शिष्यों की चेतनारुपी सरिता गुरु के ज्ञानरुप सागर में जा मिलती है। शिष्य अपने हृदय मंदिर में गुरु श्रद्धा का दिप प्रज्वलित रखकर जीवनयात्रा दौरान आत्मविश्वास का बल प्राप्त करता है। गुरु की अनुकंपा और कृपा से धन्य बने शिष्य के पास अहोभाव और आंसुओं के सिवा देने को कुछ नहीं होता है।

सद्गुरु अपने शिष्य की वेदना और संवेदना दोनों से ज्ञात होते है। उनका दिव्य प्रेम शिष्य के लिए बिना शर्तों वाला होता है। सद्गुरु को शिष्य की आध्यात्मिक उन्नति के अलावा और कोई अपेक्षा नहीं होती है। गुरु की कृपा ग्रहों की गति व मानवी के अतल मन को बदल सकती है। शिल्पकार जैसे पाषाण की सुंदर मूर्ति बना लेता है, उसी तरह गुरुकृपा हमें अप्रत्याशित मुसिबतों में मददरुप बनती है।

सन २००९ से कार्यान्वित हमारी **"वैदिक ज्योतिष संस्थान"** मुंबई की अव्वल क्रम की संस्था है जो निःशुल्क ज्योतिष शास्त्र एवंम् वास्तुशास्त्र के अलावा हस्तरेखा विज्ञान तथा स्वरज्ञान का बोरीवली - मलाड के ४-४ सेन्टरों में ज्ञान देकर सामान्य जन-मानस को इनका महत्व तथा उपयोगिता प्रदान करती है। जिनका पूरा श्रेय संस्था के आचार्य पूजनीय श्रीमान अशोक गुरुजी को ही मिलता है। संस्था में निःस्वार्थ सेवाभावी सभी शिक्षकगण की ओर से आचार्य श्री जी को यह चंद्र जैसा चौदहवे साल की अनेक शुभकामनाएँ - अभिनंदन - सस्नेह सादर वंदन ।

के. पी. शास्त्र जैसे गहन कठिन शास्त्र को भी विद्यार्थीओं को बड़ी सरल रीत से सिखानेवाले के. पी. विद्यमान और संस्था के भूतपूर्व प्रिंसिपल श्री हिरेन भावसार सर जी हम सब के बड़े चहिते है। अपने व्यवसाय क्षेत्र में अग्रेसर होते हुए हिरेन सर पिछले साल अमेरिका में जा बसे है। हिरेन सर, आपको हम सभी की ओर से सुनहरे भविष्य की ढ़ेरो शुभकामनाएँ।

प्रणाम ।

सदा अग्रेसर रहनेवाली वैदिक ज्योतिष संस्थान (रजि.) के प्रणेता आचार्य पू. श्री. अशोक गुरुजी को गुरुपूर्णिमा के इस अवसर पर शत - शत नमस्कार ।

।। हरि ॐ ।।

- वर्षा धीरज रावल

''हरी ॐ''

संस्था परिचय

वैदिक ज्योतिष संस्थान का मूल उदेस्य आज के आधुनिक युग मे ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र को पहले के जीतना ही आदर पात्र बनाना एंव ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र को जीवंत रखना तथा निस्वार्थ भावना से यह शास्त्रो का प्रचार व प्रसार करना है।

आज के युग मे यह ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र दोनो ही शास्त्रो को ऐसी निम्न कक्षा की गीनती पर लाकर खडा किया गया है की शास्त्र के रचयीताओ ने कल्पना भी नही की होगी ऐसी अवहेलना ईस युग मे हो रही है, लोग ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र मे विश्वास रखते ऐसा बताने मे भी जीजक अनुभव करने लगे है, लोग अपने को पिछडा समज लेगें यह डर रहता है, गुप्तता रखना चाहते है, शर्म का अनुभव करते है, आखीर क्यो ? क्योकि हम हमारी मूल संस्कृति से विमूख हो रहे है, संस्था लोगोके मानसपटल पर से उपरोक्त सारी झुठी गलत फहमी भेद-भरम तथा डरका निर्मूलन करने का निस्वार्थ प्रयास के साथ साथ लोगोको ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र के निर्मल ज्ञान प्रदान करने का ज्ञान यज्ञ चलाती है।

आज के युग में ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र से लोगो की आपेक्षा इस तरह बढ़ गई हे की जैसे आपकी समस्याओ का तुरंत निकाल, हाथो हाथ निकाल, तुरंत निवारण, लोगो को इन सारी अंधश्रद्धा से, पूर्वाग्रहो से बाहर लाना है । एलोपथी दवाई गोली लेते ही दर्द गायब, इस मानसिकता से लोगो को बाहर लाना है।

वैदिक ज्योतिष संस्थाने ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र का जो अभ्याषक्रम बनाया है वह वास्तव मे एक प्रकार के गणित की गणना तथा विज्ञान ही है, संस्था का यह अभ्याषक्रम पौराणीक द्रष्टांतो एवं उदाहरणो द्वारा अत्यंत सरल पद्धति से पढाया जाता है, यहा ज्योतिशास्त्र, वास्तुशास्त्र तथा स्वरज्ञान के विस्तृत अभ्याषक्रम ज्ञान दान की नि:शुल्क सेवा संस्था के मानद अध्यापको के द्वारा दी जाती है। किसी भी उम्र के ज्ञान पिपांसु एवं जीज्ञासु बंधु भगिनीयो को सहृदय आमंत्रण दीया जाता है। वर्षांत परिक्षाए लेकर प्रमाण पत्र दीया जाता है। यह शास्त्र हमे वेदो के द्वारा मिली हुई अमुल्य धरोहर है, वरदान है, न जाने हमारे भारत वर्ष के ऋषीमुनि योगीयो की कितने युगो युगो के परिश्रम का यह निचोड है इस अमृतरुपी रस का पान करे, ज्योतिष शब्द का अर्थ क्या है ? इस की ज्योत का प्रकाश इस प्रकाश के उजाले से स्वत: तथा लोगो के जीवन में उजाला लाना है।

मानद अध्यापकगण

श्री. आचार्य अशोकजी

श्री. हरिलाल मालदे, श्रीमति वर्षा रावल रावल, श्री. जयेश वाधेला वाघेला, श्री, प्रदिप जोषी,
श्री. नितीन भट्ट, श्री. तेजश जैन, श्रीमति प्रमीला पंचाल, श्रीमति प्रीती ठाकर,
डॉ. हीमांशु व्यास, श्री. विवेक शाह, श्रीमति रूपल दमणीया

www.vedicjyotishsansthanmumbai.com

શ્રી નિરંજનભાઈ જોશી
૧-૧-૧૯૨૭ થી ૧૩-૧૦-૨૦૧૪

શ્રી ગુરૂવર્ય

સૌરાષ્ટ્રના પ્રખ્યાત કેળવણીકાર અને સુપ્રસિદ્ધ શ્રી ઈશ્વરલાલ કરશનજી જોશી અને લક્ષ્મીબહેનને ત્યાં તા. ૧-૧-૧૯૨૭ ના રોજ ડેડાણ ગામે અર્વાચીન યુગના જ્યોતિષ ભાસ્કર શ્રી નિરંજનભાઈનો દ્વિતીય પુત્ર તરીકે જન્મ થયો. જરૂરી શિક્ષણ ગુજરાતમાં પુરૂં કરી ૫૦ના દાયકામાં મુંબઈ આવી અર્થોપાર્જન માટે પ્રવૃત્તી શરૂ કરી અને સાથે સાથે જ્યોતિષવિદ્યાની સાધનાની શરૂઆત કરી. પિતાશ્રી શ્રી ઈશ્વરલાલભાઈના સિદ્ધાંતોને પોતાના જીવનમાં સ્થાન આપી નિર્ણય કર્યો કે ''જ્ઞાનની પરબ હોય, વિદ્યાનું વેચાણ નહીં'' અને સન ૧૯૫૬ માં ચોપાટી પર આવેલ 'મરીના મોર્ડન' સ્કૂલમાં જ્યોતિષ શાસ્ત્રના નિઃશુલ્ક વર્ગો શરૂ કર્યા. એક જ ભાવના અને ખેવના સાથે કે ભણ્યા બાદ વિદ્યાર્થીઓ ધંધો કરશે તો પણ માર્ગદર્શક બનીને. પણ કમસેકમ લેભાગુ અને સ્વાર્થી જ્યોતિષોની જેમ સમાજને ગેરમાર્ગે તો નહીં દોરે. ચાર દાયકાથી વધુ તેમણે કરેલા આ જ્ઞાનયજ્ઞમાં ૪૫,૦૦૦થી વધુ ભાઈબહેનો જેમાં સામાન્ય માનવીથી માંડીને વૈજ્ઞાનિક, ડોક્ટરો, વકીલો અને નિવૃત્ત ન્યાયાધીશોને જ્યોતિષ જાણતા અને માણતા કર્યા. કોંક્રીટના જંગલ જેવા મુંબઈ શહેરમાં અઠવાડિયાના દરેક દિવસે કેન્દ્રમાં વર્ગ અને રવિવારે ત્રણ કેન્દ્રમાં વર્ગ જેમાં કામા હોલ, ગીરગામ, પ્રેમપુરી આશ્રમ, સાંતાક્રુઝ, મલાડ, બોરીવલી, માટુંગા, મુલુંડ અને ઘાટકોપર સામેલ હતાં.

જ્યોતિષશાસ્ત્રના પ્રસાર અને પ્રચાર માટે આજીવન ભેખ ધારી ૯-૯ કેન્દ્રમાં પોતે જ ભણાવેલ વિદ્યાર્થીઓના સાથ સહકાર લઈ યોગ્યતા પ્રમાણે અધ્યાપક નીમિને અવિરત જ્ઞાન પ્રસાર, પ્રચાર અને સમાજસેવા, માર્ગદર્શનનું જ્વલંત ઉદાહરણ કદાચ આવતા અનેક વરસો સુધી જોવા નહી મળે.

આજીવન નિઃસ્વાર્થ અને ભેખધારી નિષ્ઠાવાન વ્યક્તિત્વને શત શત વંદન.....

"संदेश"

Hiren Bhavsar
Ex. Principal

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि वैदिक ज्योतिष संस्थान मुंबई द्वारा आयोजित गुरु पूर्णिमा महोत्सव के उपलक्ष्य में एक स्मरणिका का प्रकाशन किया जाता है जिसमें Medal & Certificate Distributions तथा ज्योतिष के विषयों पर प्रकाश डाला जाता है।

मै इस अवसर पर अपनी शुभ कामनाए भेट करता हूँ और मंच को बधाई देता हूँ। इस प्रयास के सफलता की कामना करता हूँ।

ज्योतिष के क्षेत्र में वैदिक ज्योतिष संस्थान मुंबई का अपना ही विशेष स्थान है। यह स्मरणिका मील का पत्थर साबित होगी । इसमें व्यवाहारिक ज्ञान ज्योतिष का होगा, जो कि सरल शब्दों में आम जन तक पहुचाया जाएगा। यह वास्तविक तथ्यों पर आधारित होगा ।

मैं आशा करता हूँ कि इस स्मरणिका के माध्यम से ज्योतिष के विद्यार्थी अपनी बहु आगामी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए आगे आयेगें ।

स्मरणिका के सफल प्रकाशन तथा वैदिक ज्योतिष संस्थान-मुंबई के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

- Hiren Bhavsar

શ્રીમતી સ્મિતાબેન આર. પારકર અનાવીલ બ્રાહ્મણ કુટુંબમાંથી આવેલ છે. એમણે એમ.એ. તથા M.Ed. કરેલ છે. તેમના જીવનનો મુદ્રાલેખ છે કે શાળા એ મંદિર છે તથા શિક્ષણ આપવું જે પુજા-આરાધના છે. તેઓ લગભગ ૧૮ વર્ષ સુધી શિક્ષિકા તરીકે સેવા આપી ચુક્યા છે. વિદ્યાર્થીઓને માર્ગદર્શન આપી એમને આગળ વધતા જોઈ ગર્વ અનુભવે છે, એમનું જીવન ધ્યેય છે કે દેશનું દરેક બાળક-બાલિકા શિક્ષિત હોય, શિક્ષણનો પ્રકાશ સર્વત્ર ફેલાય, શિક્ષા ક્ષેત્રે ૧૮ વર્ષની સેવા આપ્યા બાદ તેઓ સરકારના એજ્યુકેશન ઈન્સ્પેક્ટર (શિક્ષણ ક્ષેત્રે તપાસકર્તા) તરીકે ૬ વર્ષ સેવા આપી, આ દરમ્યાન તેઓને વિદ્યાર્થીઓની સમસ્યાઓનો સારો એવો અનુભવ થયો અને તેમની ઉત્કૃષ્ઠ સેવા તથા અનુભવને કારણે સરકાર દ્વારા મોટી જવાબદારી આપવામાં આવી જે (શિક્ષણ વ્યવસ્થા) એજ્યુકેશન સુપરીટેન્ડન્ટ તરીકેની હતી. અહીં તેમણે પોતાની કાર્ય સાધકતા, કાર્ય સમતા, સમર્થતાનો ઉત્કૃષ્ઠ પરિચય આપ્યા બાદ નિવૃત્ત થયા, પરંતુ બીજા લોકોની જેમ નિવૃત્તિ બાદ શાંત બેસવું એમના સ્વભાવમાં ન હોવાને કારણે તેઓ સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના મહિલા વિભાગમાં કાર્યરત રહે છે. તે ઉપરાંત તેઓ કુમારીકાઓ તથા યુવતીઓના સુધારા, પ્રગતી, શિક્ષણના લાભાર્થે કાર્ય કરનારી સંસ્થાના પ્રમુખ પદની જવાબદારી પણ સંભાળે છે. વેદિક જ્યોતિષ સંસ્થા તેમની આ સેવામય સફરમાં હંમેશા આગળ વધવાની શુભેચ્છા આપે છે અને ઈશ્વર તેમને આ કાર્યમાં હંમેશા આગળ વધવાની શક્તિ પ્રદાન કરે અને આપણી સંસ્થાના ગુરૂપૂર્ણિમા સમારોહના માનવંતા મહેમાન બનવાનું આમંત્રણ સ્વિકારવા બદલ આભાર વ્યક્ત કરે છે.

पति रक्षति अपत्यं यः पिता

સંતાનનું રક્ષણ જે કરે તે પિતા, રક્ષણ કયા પ્રકારનું ?

પ્રસંગ : ઉંમરલાયક દીકરીએ પિતાને કહેલા શબ્દો. મારા માટે મુરતિયો શોધવામાં રૂપ કે રૂપિયામાં કઈક ક્યાશ હશે તો વાંધો નહીં, પણ તેનો સ્વભાવ બિલ્કુલ તમારી જેવો જ હોવો જોઈએ પપ્પા. તમારી પાસે વ્યક્તિને બરાબર સમજવાની સુઝ પણ છે અને સુધારવાની શિસ્ત પણ છે. તમે સગવડ અને સંસ્કાર બન્ને આપી શક્યા છો. અમને મોજ પણ કરાવી છે. છતાં મર્યાદાના પાઠ પણ શિખવ્યા છે. બહું ઓછાને મળે તેવા પપ્પા મને મળ્યા છે. પિતા માટે સંતાન પાસેથી આનાથી વધુ ઉંચા અભિપ્રાય શું હોય. દા. ત. નાળિયેરી, મીઠા ફળ આપે પણ છાંયડો નહીં, વડ છાયો આપે પણ ફળ નહીં, જ્યારે આંબો બન્ને આપવાની ક્ષમતા ધરાવે છે, માતાપિતા આંબાની જેમ સગવડ અને સંસ્કાર બન્ને આપે.

ગ્રસ્ત પપ્પા, વ્યસ્ત પપ્પા, મસ્ત પપ્પા : (૧) **ગ્રસ્ત પપ્પા** : કામના બોજ હેઠળ જેમના જીવનનો સમય અને સંવેદના નામશેષ થઈ ગયા હોય છે. પોતાના નોકરી – ધંધાના લક્ષ્યમાં એવા તે ખોવાઈ જાય છે કે કુટુંબનાં સભ્યો માટે સમય આપવો જોઈએ એવી સમજ જ ન કેળવી હોય.

(૨) વ્યસ્ત પપ્પા : સમય ફાળવવા માંગે તોય ફાળવી ન શકે. કોમ્પ્યુટર કેલ્ક્યુલેશન અને કલેકશનમાં કાયમ કંટાળેલા જ હોય. અંદરથી કુટુંબ લાગણી હોય પરંતુ કામની વ્યસ્તતાને કારણે સમય ન ફાળવી શકતા, ઘરના સભ્યોની માફી માંગી પોતાની મજબુરી વ્યક્ત કરે છે. દા. ત. પુત્ર પિતાને કહે મારી સાથે એક કલાક રમોને પિતા : બેટા મારો એક કલાક કેટલો કિમતી છે ? ખબર છે પુત્ર પોતાના બેડરૂમમાંથી પીગીબેંક લઈ આવી ચીલ્લરનો ઢગલો કરે છે અને પિતાને કહે છે : પપ્પા આટલા પૈસામાં મને કેટલી મિનિટ આપશો ? ખુબ ભણેલા અને મોટી કંપનીના ડાયરેક્ટર પિતા રડી પડે છે અને પુત્રને તેડીને બચી કરે છે. આત્મનિરીક્ષણ કરજો. નહીતર ભવિષ્યમાં તમારા ઘરમાં પણ આવો પ્રસંગ ન બને.

૩) મસ્ત પપ્પા : સંતાન માટે હંમેશા સમય હોય. વિના સંકોચે સંતાન સલાહ લઈ શકે એવો સ્નેહ આપતા હોય. લાડ કે ધાડનો અતિરેક નહીં પરંતુ શિસ્તની સમજ પોતાનાં આચરણથી આપતા હોય. દા. ત. જેમ કુંભાર ઘડો બનાવતી વખતે ઉપરથી ટીપે નહીં તો ઘાટ બરાબર આવે નહીં, પણ અંદરથી હાથનો ટેકો પણ આપે. આવા પિતા સાથે સંતાન મોટો થઈ જાય તોય હરવા – ફરવા અને રમવાનું મન થાય. પિતા, યુવાન પુત્ર સાથે રમત અને જ્ઞાનમાં સ્પર્ધા કરી પુત્રનું ઘડતર કરે. પુત્ર ભૂલ કરે છતાં માફ કરી, ભૂલની પાછળનાં કારણ બતાવે, ફરી ભૂલ થાય છતાં ક્રોધ ન કરી ધીરજ રાખી સુધરવાનો સમય અને સમજ આપે એવા મસ્ત પિતા સર્વને મળો.

- નિકુંજ શેઠ

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

Pandit Jiten Harihar Mehsanawala, Jyotirvid

Editor : 'Agamyawani'
(Gujarati Monthly on Astrology Ayurved,
Religion, Vedic Subjects)
Pandit Calendar, Pandit Pocket Calendar, (54th year)
Founder : Late Harihar Pandit Mehsanawala

Pt. Jiten Harihar Mehsanawala, Son of Late Harihar Pandit Mehsanawala, is Astrologer, Palmist, Vastu Consultant, Chemical Engineer, Editor of renowned magazine, “Agamyawani” and Columnist Writer in “The Mumbai Samachar 200 years old prominent newspaper in Asia continent.

Astrology known also as vedic science is helpful to know the influences of the stars and planets on human affairs and terrestrial events, and Pt. Jiten Harihar Mehsanawala is an acclaimed Astrologer.

A chemical engineer from Bhaghubhai Mafatlal Polytechnic, Pt. Jiten Harihar Mehsanawala set aside his career aspirations to step into the shoes of his father, Late Harihar Pandit Mehsanawala. He believes Astrology is a scientific subject and offers solutions based on deep and logical calculations of horoscopes and classic references.

Renowed and well known Astrologer Late Harihar Pandit Mehsanawala who contributed his research based Articles In 'Mumbai Samachar' since 1950. His son Pandit Jiten is contributing Aajnu Panchang' and Astrology and religious related Articles since March 1985 after sad demise of his father.

Carrying forward his father's legacy, Pt. Jiten Harihar Mehsanawala has become a distinguished editor of the famous magazine in the world of Astrology, “AGAMAYAWANl and also publisher of 'Pandit Calendar' & 'Pandit Pocket Calender' giving auspicious and inauspicious days of the year, festival, Muhurta Guide & Various useful subjects.

The magazine “AGAMAYAWANI” is published sinced five decades has marked its Golden Jubilee.

Special issues on various subjects such as astrology, ayurveda, astrology and health, Vastushastra, Muhurt Shastra, Spiritual, religious and many more topics have been published and distributed to readers, students, for their references.

Well Wishers

Dilip N. Gala

Apurva R. Parekh
Web Adviser

Nilay Chaubal
Web Designer

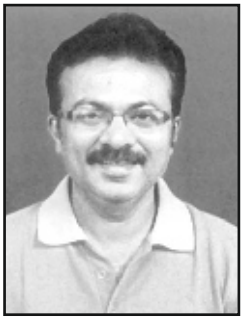

Mukesh Mehta

Kiran Shah

Zankhana Dave

Jayesh Desai
Souvenir Editor

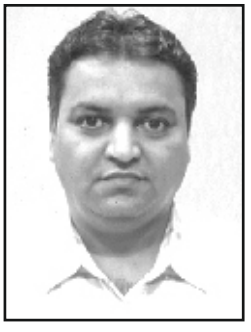

Kamlesh Gandhi

Sarvil Vaidhya

Hitendra Shah

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

Winner of the Silver Medal for Excellence

Trisha R. Singh
Vedic Hastrekha Vignata
1st Year

Pragna A. Sheth
Vedic Jyotish Pravesh
1st Year

Niyanta D. Katelia
Vedic Vastu Pravesh
1st Year

Gaurav U. Sharma
Vedic Jyotish Bhushan
2nd Year

Himanshu R. Oza
Vedic Vastu Bhushan
2nd Year

Jigisha H. Mandalya
Vedic Jyotish Martand
3rd Yr.

Unnati B. Shah
Vedic Swargyan Gnyata

ત્રણ વાતને યાદ રાખશો નહિં - તમારૂં કો'કે કરેલું અપમાન, તમે કરેલો ઉપકાર અને બીજાના દુર્ગુણો.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SATURDAY

Alpa D. Parekh

Alpa R. Shah

Ashish S. Pathak

Deepika R. Patel

Dinesh L. Shah

Gaurang P. Trivedi

Heena C. Chheda

Hiral V. Doshi

Hitesh D. Oza

Jinesh D. Kantharia

Kaushika J. Vyas

Khyati K. Vora

Krupali P. Yadav

Meena D. Pithava

Meena N. Shah

Meeta P. Shrimankar

બધી જ કલાઓમાં જીવન જીવવાની કલા બેસ્ટ છે, સારી રીતે જીવી જાણે એ જ સાચો કલાકાર.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SATURDAY

Meeta S. Shah

Nishant N. Mitna

Niyati B. Mehta

Pooja M. Bhayani

Priti F. Shah

Priti T. Joshi

Rajnikant B. Trivedi

Riddhi S. Savla

Rupal A. Solanki

Sonal N. Chikani

Tanvi V. Gandhi

Urvashi S. Gajjar

Varun S. Gandhi

Vidhi R. Mehta

Vimal K. Dave

માતાની છાયા અને પિતાની છત્રછાયા એ તો બાળકના જીવનમાં અનેરી માયા.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - SATURDAY

Ayushi B. Shah

Bhagwandas N. Mehta

Jinesh M. Shah

Meena V. Anand

Neeta M. Khatri

Pinak N. Dewani

Rakesh K. Panchal

Ramesh M. Ashar

Trupti H. Parekh

Tushar R. Joshi

Varsha H. Joshi

Vibha K. Sheth

બીજા સાથે એવી જ ઉદારતા રાખો, જેવી ઈશ્વરે તમારી સાથે રાખી છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - 3RD YEAR - SATURDAY

Anand V. Soni

Bhavika R. Joshi

Jigna J. Kapadiya

Mena G. Merla

Mital A. Kamdar

Nayna H. Makwana

Paru J. Purohit

Reeta N. Mehta

Shilpa S. Parab

Sonal D. Oza

Sunil G. Danduliya

Yagnesh V. Shah

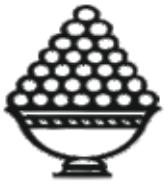

કોઈનો સ્નેહ ક્યારેય ઓછો નથી હોતો, આપણી અપેક્ષાઓ જ વધારે હોય છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SW 2022

Bhakti K. Nandola

Darshana A. Shah

Heena N. Panchal

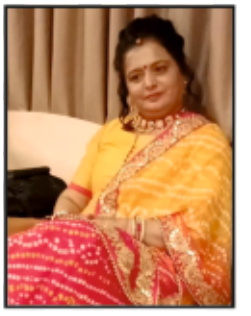

Jigisha H. Mandalya

Kamlesh V. Shah

Saroj B. Shah

Yashwant O. Patitroda

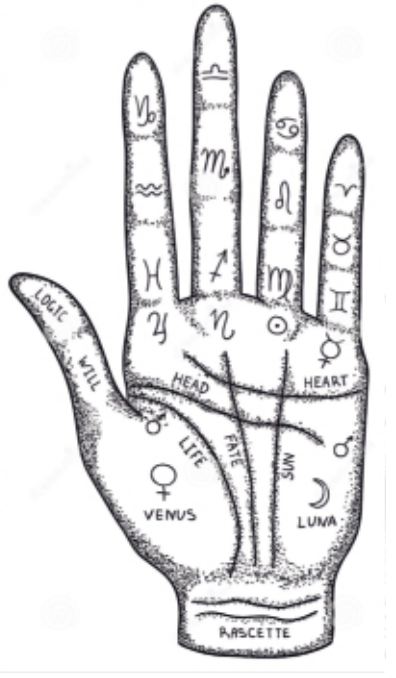

ધૈર્ય, ધર્મ, મિત્ર અને પત્ની - આ ચારેયની પરીક્ષા વિપત્તિના વખતે જ થાય છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD

Avinash B. Bhagalia

Bhavin G. Salvi

Himanshu J. Joshi

Indira S. Acharya

Jay M. Joshi

Jayshree M. Shah

Kalpita J. Joshi

Neeta D. Mahyavanshi

Pravinchandra C. Maharaja

Raksha V. Savla

Saumya K. Shah

Shivam H. Joshi

Snehal V. Shah

Sonal G. Joshi

Yogesh B. Popat

મોટાઈ અમીરીમાં નહીં, ઈમાનદારી અને સજ્જનતામાં સમાયેલી છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MALAD

Amish M. Sheth

Bhamini I. Bhatt

Bharat V. Vajir

Binita P. Thakkar

Dharmesh D. Dave

Dharmesh Desai

Geeta M. Bhuta

Kshitij B. Dave

Praful P. Seta

Pragna A. Sheth

Prashant D. Badheka

Tejas P. Panchal

Umasankar H. Pandya

Yogesh U. Khatri

આપણે જ આપણા નસીબનું ઘડતર કરીએ છીએ અને તેને ભાગ્યનું નામ આપીએ છીએ.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR - MALAD

Amar S. Upadhyay

Bhavesh J. Nathwani

Bipin J. Rajgor

Deepa A. Joshi

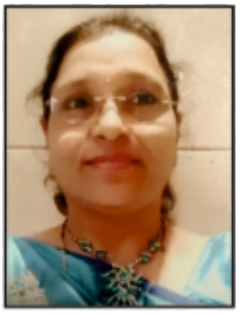
Dipika V. Panchal

Manish R. Rawal

Manoj A. Mehta

Megha A. Shah

Navneetkumar H. Rana

Nilesh J. Rupani

Nisha M. Gada

Nitin D. Dave

Premal P. Soni

Sanjay A. Bhatt

Sashikant P. Kurani

Shreya J. Shah

ઈર્ષ્યા એવો અગ્નિ છે, જે જીવતા માણસને બાળે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR - MALAD

Unnati B. Shah

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD (HINDI)

Anjali A. Ambre

Arpita Dey

Darshan D. Jain

Kavita K. Oza

Komal M. Jaiswal

Lata J. Jain

Mamta R. Sharma

Mukesh N. Majithia

Naresh P. Chhabaria

Nirmala K. Vyas

Poonam G. Jain

Poonam O. Yadav

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD (HINDI)

Pradnya N. Chavan

Radhesyam G. Kumavat

Ramesh R. Arya

Ramkrushna S. Mishra

Sachin A. Dixit

Sarda R. Kumavat

Sheela V. Katheeh

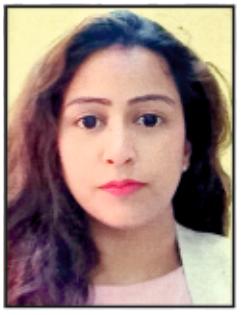
Shikha S. Chaube

Sony R. Chimnani

Sujitkumar R. Pandey

Sumit K. Chaube

Surender A. Ratti

Syam K. Mishra

Syamsundar Lakhotia

Tina J. Pandit

Udip C. Salvi

તૈયારી અને તકનો મેળાપ થાય ત્યારે જે બને તેનું નામ નસીબ.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MALAD (HINDI)

Abhishek J. Sharma

Chetan B. Gadhiya

Dharmaveer T. Gupta

Indira M. Gupta

Kudimal J. Modi

Maitri R. Kenia

Manisha B. Sharma

Nikita D. Karani

Niyanta D. Katelia

Rakesh B. Sawlani

Rakesh Kumar Singh

Sanket A. Garg

Suman R. Sawlani

Trisha R. Singh

Vinod B. Sodha

માતાની મમતા ને પિતાનો પ્રેમ, આ જીવનભર વિસરાય કેમ !

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR - MALAD (HINDI)

Anand P. Upadhyay

Ashwini A. Prabhu

Gaurav U. Sharma

Govardhan T. Kullal

Hetal M. Modi

Himanshu R. Oza

Mohit Singh

Piyush K. Savla

Prakash M. Shinde

Raj R. Makhija

Sandeep Neema

Sarita P. Sharma

Vikash Mishra

ફૂલો એ પૃથ્વી પર ફોરમ ફેલાવતાં અને હૈયાંને અજવાળતાં તારાઓ છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MONDAY

Amita D. Parekh

Bankim R. Desai

Bharat M. Shah

Bimal P. Rasputra

Chetan C. Bhavsar

Chetana H. Parmar

Chirag G. Savla

Harish M. Shah

Kalpana H. Sheth

Kavita R. Shah

Manish R. Dedhia

Manoj A. Mehta

Neha M. Shah

ॐ
महामंत्र

બીજા દ્વારા મુકાયેલો અંકુશ નીચે પાડે છે જ્યારે પોતા દ્વારા મુકાતો અંકુશ ઉપર લાવે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT PASS STUDENT - 2021

Avani V. Joshi

Divaya V. Parikh

Harshita B. Patel

Hitendra A. Parmar

Manish D. Chheda

Nitin P. Vora

Reshma M. Gangwani

Urvi S. Satayga

Vishakha C. Vadia

આ વાતને યાદ રાખશો નહિં - તમારૂં કો'કે કરેલું અપમાન, તમે કરેલો ઉપકાર અને બીજાના દુર્ગુણો.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

વૈદિક જ્યોતિષ સંસ્થાન (રજીસ્ટર્ડ)

રજી. પત્રવ્યવહારનું સરનામું :
૧૨૧/૪૪ ડી, વિશ્વકુંજ સોસાયટી, સેક્ટર ૧, ચારકોપ, કાંદીવલી (વેસ્ટ), મુંબઈ-૪૦૦ ૦૬૭.
મોબાઈલ : ૯૩૨૨૨૬૧૭૦૯ / ૭૦૪૫૪૭૦૬૬૧ • ઈમેલ : vjtvv1@gmail.com

જ્યોતિષના નિઃશુલ્ક વર્ગો

ગુજરાતી માધ્યમમાં હસ્તરેખા, જ્યોતિષ, વાસ્તુ અને સ્વરજ્ઞાનના વર્ગોમાં પ્રવેશ
જાન્યુઆરી થી બોરીવલી અને મલાડ ખાતે

ગુજરાતી અને હિન્દી

૧. પ્રથમ વર્ષ- **વૈદિક જ્યોતિષ પ્રવેશ.**

૨. દ્વિતીય વર્ષ- **વૈદિક જ્યોતિર્ભૂષણ.**

૧. પ્રથમ વર્ષ- **વૈદિક વાસ્તુપ્રવેશ**

૧. **વૈદિક સ્વરજ્ઞાન જ્ઞાતા**

૧. પ્રથમ વર્ષ- **વૈદિક હસ્તરેખા વિજ્ઞાતા**

૩. તૃતિય વર્ષ- **વૈદિક જ્યોતિષમાર્તંડ**

૨. દ્વિતીય વર્ષ- **વૈદિક વાસ્તુભૂષણ**

૪. ચતુર્થ વર્ષ- **સ્વાધ્યાય**

નોંધ :
ભાષાનું જ્ઞાન ધરાવતા કોઈ પણ ઉમરના ભાઈઓ તથા બહેનો પ્રવેશ મેળવી શકે છે.

શાસ્ત્રમાં જ્ઞાન દાનને શ્રેષ્ઠ દાન કહેવાયું છે જે આ સંસ્થાનું એકમાત્ર ધ્યેય છે.

સાહસ ગયું તો સમજી લેવું કે માણસની અડધી સમજદારી પણ ગઈ.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

We are grateful to the Trustees, Committee and Management of the following Institutions for permitting us to utilize their premises for conducting our classes.

1. **Sheth M.K.E.S. English High School, Malad (W)**
2. **Anandibai Kale Vidyalay, Borivali (W)**

We are grateful to the Newspaper and advertisers for their best co-operation and support.

- ★ **Janmabhoomi**
- ★ **Divya Bhaskar**
- ★ **Mumbai Samachar**
- ★ **Gujarat Samachar**
- ★ **Nav Bharat Times Hindi**

नक्षत्र ज्ञान माला

अश्विनि भरणी पद चार
कृतिका एक चरण है मेष ।

कृतिका तिन रोहिण्ये चार
दो पद मृग वृषभ विचार ।

मृग दो पद आर्द्रा चार
तिन पुर्नवसू मिथुन विचार ।

एक पुर्नवसू पूष्य श्लेष
जानिये कर्कट राशि विषेश ।

मधा पूर्वा उत्तरा पद एक
सिंह राशिका करो विवेक ।

उत्तरा तिन सकल पद हस्त
दो पद चित्रा कन्या जानो ।

दो पद चित्रा स्वाति चार
तिन विशाखा पद है तुल ।

एक विशाखा अनुराधा चार
ज्येष्ठा पूर्ण है वृश्चिक विचार ।

मूल पूर्वा उत्तरा पद एक
धनु राशिका करो विवेक ।

उत्तरा तिन श्रवण पद चार
दो धनिष्ठा मकर विभेद ।

दो धनिष्ठा शतभिष चार
पूर्वा तिन पद कुम्भं निर्धार ।

पूर्वा एक उत्तरा चार
सकल रेवति मीन विचार ।

तिथि दोहा

प्रतिपदा एकादशी षष्ठी नन्दा जान।
दूज सप्तमी द्वादशी भद्रा मान।
तृतीया अष्टमी त्रयोदशी जया जान।
चौदशी चौथ नवमी येतो है रिक्ता मान।
पंचदशी पंचमी तथा दशमी है पूर्णा मान।
सब तिथियोके नाम सम जानो फल परिणाम।

(ॐ) मंगला चरण (ॐ)

॥ श्रवण के आरंभ का मंगलाचरण ॥

ॐ सत्यं ज्ञानमनंतं यन्निष्कलं निष्क्रियं परम् ।
अद्वितीयं निर्विशेषं ब्रह्म तत्समुपास्महे ॥१॥

वह जो सत्यरुप, ज्ञानरुप, अनंत, प्राणादि कलाओसे रहित माया से रहित सूक्ष्म और व्यापक, द्वैत्य से रहित और नामादि विशेष से रहित ब्रह्म है, उनका हम अच्छी तरह से ध्यान करते हैं। (१)

शंकरं शंकाराचार्य केशवं बादरायणम् ।
सूत्रभाष्य कृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥२॥

विष्णुरुप भगवान व्यास और महेश्वररुप श्री शंकराचार्य जो ब्रह्मसूत्र के शारीरिक भाष्य के कर्ता है, वह ऐश्वर्यादिवाले दोनों को मैं बार बार नमन करता हूँ।(२)

अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाक्या।
चक्षुरुमीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥

अज्ञानरुप अंधकारसे अँधे बने हुए की अंत:करणरुप आँखे जिन्होंने अंजन की सलाई द्वारा खोली वह श्री गुरु को मेरे प्रणाम हो। (३)

ब्रह्मामानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति,
द्वंदातितं गगनसदृश्यं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
ऐकं नित्यं विमलचलं सर्वधीसाक्षीभूतं,
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुंतं नमामि ॥४॥

वह जो ब्रह्मरुप आनंदवाले, शिष्यों को परमसुख देनेवाले, अविद्या से रहित, ज्ञानरुप, सर्व द्वंद्वोसे पर, गगन जैसे निर्लेप वह आप है, इत्यादि महावाक्यों के लक्ष्यार्थरुप, एक तीनों कालमें रहनेवाले, सर्व प्रकार की अशुद्धि से रहित, चलायमान से रहित, सब प्राणीओं की बुद्धि के साक्षीरुप, छह प्रकार के भावविकारों से मुक्त एवम् तीन गुणो से रहित है, वह सद्गुरु को मैं वंदन करता हूँ।

समाप्ति मंगलाचरण

॥ श्रवण के समाप्ति का मंगलाचरण ॥

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमोद्वैततत्वाय मुक्तिप्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥१॥

सत्यरुप आपको प्रणाम, जगत के कारणरुप आपको प्रणाम, ज्ञानस्वरुप और सर्व लोक के आश्रयरुप ऐसे आपको प्रणाम, अद्वैत तत्वरुप को मोक्ष देनेवाले को प्रणाम, व्यापक और शाश्वत ब्रह्म को प्रणाम। (१)

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम् ।
त्वमेकंजगत्कर्तृपार्तृप्रहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥२॥

एक आप शरण ग्रहण करने योग्य हो, एक आप श्रेष्ठ हो, एक आप संसार को पालनेवाले तथा स्वयं प्रकाश हो, एक आप मायासे पर, अचल और सर्व विकल्पो से रहित हो।(२)

भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्, गतिः प्राणानां पावनं पावनानाम्।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकं, परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥३॥

भय उत्पन्न करनेवालों के भयरुप, भयंकरों के बचकररुप, सर्व प्राणीओं की गतिरुप, पवित्र बनाने वालों को पवित्र बनाने वाले, एक आप उच्च पदो में रहनेवालों को नियम सें रखनेवाले, आकाशादि पर रहनेवालों से पर रहनेवाले और रक्षा करनेवालों की रक्षा करनेवाले हैं । (३)

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम् ।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम् ॥४॥

श्रुति स्मृतिको पुराणों के रुप को और ध्याना के भी घररुप और लोगों का कल्याण करनेवाले, जिनके चरणों में अैश्वर्यादि रहे है ऐसे श्री शंकराचार्य को मै वंदन करता हूँ । (४)

वैदिक ज्योतिष संस्थान के १४वी गुरुपूर्णिमा के अवसर पर स्वरज्ञान की मुद्राएँ विषय पर विचार

१. प्राणमुद्रा, २. अपानमुद्रा, ३. व्यानमुद्रा, ४. उदानमुद्रा, ५. समानमुद्रा

प्राण मुद्रा

१. प्राणमुद्रा :- पांच तत्वा में वायु तत्व प्राणमुद्रा का तत्व है, इसका उपप्राण नागवायु है, प्राण हमारे मगज, रीडकी हड्डी, मस्तिष्क तथा ज्ञान तंतुओ में रहकर सारे शरीर में भ्रमण करता है, हमारे शरीरकी ज्ञानेन्द्रियो नाक, कान, जीव्हा, आंखे एवं त्वचा ये सभी वायु के द्वारा कार्यरत होती है, इस के उपरांत हमारे शरीर में रही लार की ग्रंथीयाँ, श्वसनतंत्र, हृदय, यकृत, होजडि, छोटी आँत तथा पेट एवं अन्य अवयवयों पर प्राण का नियंत्रण होता है। प्राणमुद्रा कनिष्ठीका तथा अनामिका के अग्रभाग पर अंगुठे के अग्रभाग से हलके से दबाव देने पर तथा तर्जनी एवं माध्यमो को सिधी रखने पर प्राणमुद्रा बनती है, इस मुद्रा को करने से रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ती है। अनिंद्रा का रोग नही रहता, आंखो के रोग मिटते है तथा आंखो कि ज्योति बढ़ती हे, नवशक्ति का संचार होता है।

२. अपानमुद्रा :- यहाँ अपान वायु है तथा इसका उपप्राण कुर्मवायु है। हमारे शरीर के प्रजनन तंत्र, प्रजनन अवयवो, कामवेग, जातीयता के उपकरण, रुप, लावण्य, आकर्षण, बस्ती प्रदेश, मलप्रदेश व मलत्याग इन पर प्रभुत्व रखता है। अपानमुद्रा अनामिका तथा कनिष्ठी का सीधी रखने पर तथा मध्यमा और तर्जनी का अग्रभाग अंगुंठे के अग्र भागसे जोडने पर अपानमुद्रा बनती है, अपानमुद्रा से शरीर मल रहित बनता है, कब्जसे छुटकारा, सात्विका का उदय, रक्तचाप से मुक्ति, मधुप्रमेह में राहत, दंत व्याधी से राहत, हृदय चाप, प्रसव कष्ट, आधाशीशी (माईग्रेन), वात व्याधी तथा ऍसीडीटी जैसी व्याधीयाँ से मुक्ति मिलती है।

अपान मुद्रा

वयान मुद्रा

३. व्यानमुद्रा :- यहाँ व्यानवायु है तथा इसका उपप्राण धनंजयवायु है, हमारे शरीर की रुधीराभीसरण क्रिया से संबंधीत है। अस्थियाँ, मांस, त्वचा, नाडीयाँ, रक्त, ज्ञानतंतु तथा केश इन पर प्रभुत्व रखता है। व्यानमुद्रा अनामिका तथा मध्यमा के अग्रभाग पर अंगुठे का अग्रभाग रखकर तथा तर्जनी एवं कनिष्ठीका सीधी रखकर बनती है, यह मुद्रा चिंता मुक्ती, असाधारण बुद्धि प्रतिभा, मानसिक शक्तियों का विकास तथा शारीरीक संतुलन प्रदान करता है।

४. उदानमुद्रा :- यहाँ उदानवायु है इसका उपप्राण देवदत्तवायु है। हमारे शरीर में भ्रुकुटी, तालु, कंठ, हृदय तथा मगज के साथ संबंधीत है। यह उदानमुद्रा तर्जनी का अग्रभाग पर माध्यामा का अग्रभाग रखकर अंगुठे के अग्रभाग से थोडा दबाव देकर तथा बाकी उंगलीया सीधी रखकर की जाती है। उदानमुद्रा शरीर को एकदम सीधा तथा स्फुर्तिला बनाता है। उदानमुद्रा कंठ के अवरोध तथा गले व्याधीयाँ दूर करती है। वाणी तथा विचारो की शुद्धि प्रदान करती है। ध्यान करते वक्त उदानमुद्रा करने से विशुद्धिचक्र का ज्ञान केन्द्र से अनुसंधान होने पर चेतनायें उर्ध्व गामि बनती है।

उदान मुद्रा

समान मुद्रा

५. समानमुद्रा :- यहाँ समानवायु है इसका उपप्राण कुक्कलवायु है। हमारे शरीर में कफ पित्त एवं वात पर प्रभुत्व रखता है। यह पाचन तंत्र, शरीर के तापमान, लघु एवं दिर्घ शंका, भोजन में से पोषक तत्वो को खीचने का कार्य करता है। समानमुद्रा चारो उंगलीयाँ तथा अंगुठे के अग्रभागो को जोडने पर बनती है। समानमुद्रा करने से सभी तत्वो के मिलन से संतुलन, अनिष्टता, अनियमितता में सुधार, शारीरीक तथा मानसिक स्थिरता, पिच्युटरी नाम की ग्रंथी के स्त्रावो का नियंत्रण करवाती है।

संकलन

आचार्य अशोकजी

"आजीविका में ज्योतिष का महत्व"

आजीविका के लिये व्यापार, नौकरी या कृषि का सहारा लिया जाता है। इसमे सबसे महत्वपूर्ण साधन है व्यापार। व्यापार किसको करना चाहिए। किस समय शुरु करना चाहिए। किस वस्तु का करे, अकेले करे या साझेदार मे करें ? किसके नाम से करें ? जन्म स्थान में व्यापार करे, या स्थान परिवर्तन करना उचित रहेगा। इन सब प्रश्नों का समाधान ज्योतिष के माध्यम से किये जाते है।

एक प्रश्न मन मे आता है कि ज्योतिष और स्टॉक मार्केट के मध्य संबंध से हम क्यों लंबे समय से अनभिज्ञ रहें। स्टॉक मार्केट के ट्रेडर्स, इन्वेस्टर्स और ज्योतिष के विद्यार्थी इस पर अधिक ध्यान नही दे पाये। इसका मुख्य कारण वैज्ञानिक दृष्टिकोण यानि ज्योतिष के क्रमबद्ध अध्ययन व अनुशीलन का अभाव है।

सबसे पहला और सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । हम अपनी जन्म कुंडली का सावधानी पूर्वक विश्लेषण करे। अपनी जरुरतो और अपने संसाधनो के साथ-साथ अपने उद्देश्यो को समझ ले।

व्यापार वस्तुओ की तेजी मंदि पर आधारित है। आपका धन और आपकी व्यापारिक कुशलता, तेजी-मंदि के प्रभाव के आगे सब व्यर्थ साबित हो जाते है।

समय रहते उचित ज्योतिष परामर्श के द्वारा इस प्रकार की हानि से बचा जा सकता है। व्यापारी की जन्म कुंडली, हस्त रेखा या व्यापारिक परिस्थितियो को देखकर उचित निर्णय करना लाभप्रद रहता है।

सबसे पहले पंचमभाव, उसका स्वामी और उस पर अन्य ग्रहो की दृष्टी का विश्लेषण करना चाहिए।

अगर यह ग्रह सप्तम भाव या सप्तम से अशुभ संबंध बना रहे हो तो व्यापार अकेले ही करना चाहिए साझेदारी में नहीं।

अगर पंचम भाव या भावेश का संबंध सप्तम भाव या सप्तमेश से शुभ हो तभी साझेदारी में काम करना चाहिए।

ग्रहों का प्रभाव राशियो व नक्षत्रों मे भ्रमणवश बदलता रहता है। सभी ग्रह अपने अपने भ्रमण मार्ग पर निश्चित अन्तराल पर नक्षत्र परिवर्तन एवं राशि परिवर्तन करते है। इस दौरान ग्रहो के मध्य पारस्परिक युति और दृष्टियोग बनते है। यह ग्रह किस राशि में है, किस नक्षत्र में है। किस ग्रह की चाल सीधी है, या वक्री है एवं ग्रहों के उदय-अस्त आदि की क्या स्थिति है यह सब निश्चित करके संपूर्ण विश्लेषण किया जा सकता है।

कुछ राशियाँ तेजी दायक होती है तो कुछ राशियाँ मंदी दायक होती है। इसी प्रकार कुछ ग्रह तेजी दायक होते है और कुछ ग्रह मंदीदायक होते है। तेजीदायक ग्रह, तेजी दायक राशियों में स्थित होकर जब तेजी दायक दृष्टियोग बनाते है तो इन ग्रहों एवं राशियों से संबंधित वस्तुओं में तेजी अवश्य आती है।

ज्योतिष के माध्यम से इन सबका सटीक आंकलन आसानी से किया जा सकता है। तेजी मंदी के संबंध मे निरंतर अभ्यास करना बहुत आवश्यक है। इसलिये सावधानी पूर्वक ज्ञान और अनुभव का समन्वय आवश्यक है।

व्यापार करने के लिए अधिक पूंजी की आवश्यकता होती है। अधिक पूंजी के साथ अधिक जोखिम भी रहता है। कम पूंजी में व्यापार करना वायदा व्यापार कहलाता है। इसमें असावधानी से पूंजी का क्षय हो सकता है। इसलिये पर्याप्त सावधानी अति आवश्यक है।

प्रत्येक व्यक्ति को सूर्य और गुरु का बल और स्थिती अवश्य देखना चाहिए क्योंकि यह दोनो ग्रह बलवान

होने पर ही जीवन में अधिक सफलता प्राप्त होती है। जीवन में आर्थिक सफलता हेतु बलवान और शुभ सूर्य एवं चद्र के साथ बलवान लग्न का होना आवश्यक है।

२-११-५-९ भाव विशेषकर धन से संबंधित भाव है (संबंधित शब्द आता है तो १) भाव २) प्रस्टी ३) कारक ४) भावेश ५) केद्र और त्रिकोण इनके स्वामी ग्रह एवं इन भावों मे स्थित बलवान ग्रह के माध्यम से धन भाव के अवसर बनते है। केंद्र और त्रिकोण में चार या अधिक हो तो काफी जीवन में पर्याप्त आर्थिक सफलता प्राप्त करता है।

त्रिक भावो यानि ६, ८, १२ भावों को पापी ग्रहो के प्रभाव मुक्त होना चाहिए। शनि, राहु, केतु इन स्थानो मे होने पर आर्थिक पक्ष कमजोर करते है। सूर्य और मंगल ग्रह भी कुछ स्थितियों मे आर्थिक सफलता में कमी कर देता है। जन्म लग्न से सप्तम घर मे अधिक पाप प्रभाव हो तो जीवन का काफी समय और ऊर्जा बाधाओ, विरोध और शत्रु की गतिविधियो को दूर करने में निकल जाता है। सफलता देर से मिलती है। यह उन्नति में रुकावट का संकेत देने वाली स्थिती बनाती है।

अष्टम भाव में गुरु राहू धनार्जन में कमी लाते है। लग्न या दशम भाव के स्वामी का अस्त होना या निर्बल होना सफलता में बाधा देता है। ११, १२ वे भाव में स्थित पाप ग्रह निर्धनता देते है।

विशोतरी महादशा और अन्तरदशा के स्वामी परस्पर ६-८ हो तब उस काल में आर्थिक सफलता में बाधा आती है। लग्नेश, दशमेश, महादशास्वामी एवं अंतरदशा स्वामी की स्थितियों का सतत विश्लेषण आवश्यक रुप से लगातार करते रहना चाहिए। इनका राशि परिवर्तन, मार्गी वक्री होना, उदय अस्त होना विशिष्ट प्रभाव अवश्य देता है। इनका शुभाशुभ प्रभाव अवश्य देखते रहना चाहिये।

बुध शुक्र और मंगल का वक्री – मार्गी होना एवं उदय अस्त होना। शोर्ट टर्म शेयर मार्केट और कमोडिटी के मूल्य को विशेष प्रभावित करता है।

शनि गुरु और राहु का गोचर पारस्परिक दृष्टियोग बाजार को सर्वाधिक प्रभावित करते है। गुरु की शनि से युति प्रत्येक २० वर्ष में, हर्षल से प्रत्येक १४ वर्ष में, नेप्चुन और प्लूटो से प्रत्येक १३ वर्ष में इसी प्रकार शनि की युति ४५, ३६ एवं ३३ वर्ष में क्रमशः हर्षल, नेप्चुन और प्लूटो से होती है।

यह युतिया बाजार को दीर्घ अवधि में तेजी-मंदी का प्रभाव देती है। अपने इन्वेस्टमेंट की जरुरत के अनुसार सितारो की चाल को समझकर ही काम करना चाहिये। हर्षल ग्रह बाजार में अचानक और अप्रज्याशित परिवर्तन करवाता है। शनि के प्रभाव से शेयर मार्केट में मंदि और मूल्यों में कमी आती है।

गुरु ग्रह धन का कारक और वृद्धि का कारक है। इसके प्रभाव से मूल्यों मे वृद्धि होती है। राहू भी शेयर मार्केट में विकास और मूल्य वृद्धि करता है। केतू मूल्यों में और आर्थिक गतिविधियों में कमी करता है।

गुरु की प्रत्येक ३-४ वर्ष में एवं शनि की प्रत्येक ६ वर्ष में राहू या केतू से युति बनती है। यह युति मूल्यों में उतार-चढ़ाव में महत्व पूर्ण प्रभाव रखती है।

स्टॉक मार्केट के उतार-चढ़ाव को ज्योतिष के माध्यम से अच्छी तरह से जाना जा सकता है। इसको समझने के लिऐ ज्योतिष के मूल तत्वों को भली-भांति समझना आवश्यक है। ज्योतिष विद्या एक विज्ञान है जो स्टोक मार्केट की तेजी मंदि को समझने के लिये बहुत उपयोगी है। आमतौर पर समझा जाता है। किसी वस्तु के मूल्यों मे उतार-चढ़ाव मांग और पूर्ति के सिद्धांत पर आधारित है।

प्राचीन ज्योतिष के आधार पर भारत की राशि मकर है। जब मकर राशि ग्रह गोचर से या ग्रह की स्थिति

और दृष्टि से प्रभावित होती है तब भारत की अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। जब मकर राशि में ग्रहण पडता है, तब राजनितिक परिवर्तन के कारण शेयर मार्केट में उतार चढ़ाव आते है।

कोई भी राशि अपने आप में कुछ प्रभाव नही रखते है। जब कोई राशि किसी ग्रह के कारण प्रभाव डालती है तब कोस्मिक ऊर्जा का प्रभाव उस राशि से संबंधित क्षेत्रो पर पडता है। ग्रह जिस राशि में होता है, उस राशि की विशेषताओं और गुण धर्म के अनुसार प्रभावित होकर फल प्रदान करता है।

नेपच्युन ग्रह षडयंत्र संदेश देता है। हर्षल ग्रह अचानक तीव्र उतार चढाव भान्ति हडताल आदि देता है। शनि के कारण सूखा, बाढ, कीटों के द्वारा कृषि का नुकसान, राजनीति में उधल-पुथल आदि के कारण मार्केट में मंदि का रुख बनता है। गुरु ग्रह उद्योग धंधे सामान्य सम्पन्नता, राजनीतिक स्थिरता के कारण मार्केट में उन्नती का वातावरण बन जाता है।

मंगल ग्रह द्वारा व्यापारिक गतिविधियों में विकास होता है। मंगल का प्रभाव दृष्टि और युति द्वारा और उसकी राशि स्थिति के द्वारा मार्केट में सामान्यतः तेजी का वातावरण बनाता है। राहू-केतू के साथ मंगल होने पर युद्ध या अन्य नेगेटीव समाचार के कारण मंदी आ जाती है। शुक्र ग्रह द्वारा आंतरिक साधनों का विकास, शांति एवं अच्छी फसल के कारण बाजार में स्थायित्व आता है। अधिक तेजी या मंदी का प्रभाव नही होता है। बुध ग्रह द्वारा बेचैनी, व्यर्थ के सौदा, अवकाशी और अस्थिरता के द्वारा व्यापार में उतार-चढ़ाव आते है।

पापग्रह बाजार में मंदि लाते है या व्यापार का वोल्युम कम कर देते है। राशि में होने पर या शुभ ग्रह की दृष्टि होने पर मंदी का प्रभाव कम हो जाता है। किसी अन्य पाप ग्रह की दृष्टि होने पर मार्केट में शेयर का मूल्य कम हो जाता है।

शनि जिस राशि में गोचर वश भ्रमण करता है, उस राशि के प्रभाव के अंतर्गत करनेवाले क्षेत्रो, वस्तुओं या देशो में मंदि का वातावरण बन जाता है। गुरु के द्वारा प्रभावित राशि के क्षेत्रो, सेक्टर्स, उद्योगो या स्थानों पर विकास होता है। खुशहाली, सम्पन्नता एवं शेयर्स के मूल्यों में वृद्धि होती है। हर्षल का प्रभाव भी व्यापार में वृद्धि, मूल्यो में तेजी, विश्वास में वृद्धि एवं उन्नति को प्रदर्शित करता है।

ग्रहण जिस राशि में पडते है उस राशि के क्षेत्रो और वस्तुओं के मूल्य में कमी प्रदर्शित करते है।

ग्रहो की युतियों का प्रभाव मार्केट पर ग्रहों के पारस्परिक स्वाभाव के आधार पर देखा जाता है। परस्पर शत्रु ग्रहो की युति का प्रभाव नकारात्मक होता है। परस्पर मित्र ग्रहों का प्रभाव सामान्यतः मार्केट में तेजी का वातावरण बनाता है।

शनि हर्षल की युति शेयर मार्केट में मंदि कारक प्रभाव देती है। शनि गुरु की युति से बराबर में सकारात्मक वातावरण बनता है। नवीन व्यापार और उद्योग धंधो का स्थापना होती है। शनि मंगल की युति बाजार में अधिकतर मंदी या उतार चढाव लाती है।

गुरु और हर्षल बाजार में तेजी का रुख बनाते है। हर्षल और मंगल से बाजार में मंदि आता है। नेपच्युन और गुरु ग्रह से बाजार धोखा धडी या फ्राड के खुलने के कारण मंदि आती है। मंगल गुरु की युति तेजी और नवीन उत्साह का संचार करनेवाली होती है। मंगल गुरु की युति जिस राशि में उस राशि से संबंधित क्षेत्रो में तेजी आती है। ग्रहो की प्रतियुति बाजार में अधिकतर मंदी लाती है। प्रतियुति वाले ग्रह जिन राशियों में हो उनसे संबंधित क्षेत्रो में, उनसे संबंधित कंपनियों के शेयर्स मूल्यो में कमी आ जाती है।

संकलन : **Dr. Harillal Maalde**

"मारकेश : प्रकृति - प्रभाव - उपाय"

जहाँ भी हम मारक ग्रहों के प्रभाव की बात करते है, तब सामान्यतया जातक के मनमें एक डर आ जाता है। स्वाभाविक है, क्योंकि मारक - अर्थात् मारने वाला यहि तो शाब्दिक अर्थ बनता है। और वैसे भी, मारक ग्रह द्वारा मृत्युतुल्य कष्ट भोगना यह भी प्रेरित है। बिना उनके फल का विचार किये जातक मारक ग्रह के अशुभत्व से बचने के लिये तरह - तरह के उपाये करने लगते है। जिस से हो सकता है, कि समस्याएँ घटने के बजाय और भी बढ़ जाती है। इस लेख के माध्यम से हम मारक ग्रह का परिचय, प्रभाव व उपचार के बारे में जानेंगे।

कुंडली के बारह भावों में हम हमारे शरीर के अवयव, हमारे रिश्ते-नाते तथा जीवन से जुड़ी हर छोटी-मोटी घटनाओं को देखते है। इनमें से कोई भाव शुभ या अशुभ होता है। शुभ भाव के स्वामी शुभत्व व अशुभ भाव के स्वामी अशुभ देते है। किन्तु इन दोनों फल से बिलकुल अलग प्रभाव देने वाले होते है। मारक भाव तथा उनके स्वामी । मारक भाव में स्थित ग्रह भी इनकी तरह ही फल देंगे।

प्रत्येक कुंडली में २ - ३ - ७ भाव को मारक भाव जाने जाते है, और इस भाव के स्वामी ग्रह को मारकेश कहते है। लेकिन कुछ खास स्थिति में मारक भाव, मारकेश व वहाँ स्थित ग्रहों को मारक दोष नहीं लगता है। द्वितियेश व सप्तमेश एक ही ग्रह स्वामी बनने पर द्वितीय भाव मारक न गिनकर तृतीयेश मारक बनेगा। वर्तमान कलियुग के समय के बहुतया ज्योतिषी द्वि मारकम्, न मारकम् के सूत्र को सही नहीं मानते है। तदुपरांत जब मारकेश व लग्नेश में मित्रता हो, तब भी वह मारक का अशुभत्व नहीं देता। बल्कि, मारक भाव व मारकेश ग्रह वो तभी बनेंगे जब वो लग्नेश के शत्रु हो।

बहुतया मारकेश ग्रह अपनी दशा - अंर्तदशा में ही अपना प्रभाव दिखाते है। ग्रह के नैसर्गिक स्वभाव के अनुरुप उससे मिलनेवाले फल देखे जाते है। जैसे कि शुभ ग्रह बृहस्पति सामाजिक सम्मान का कारक है। लेकिन मारकेश होने पर वह किसी प्रकार हमारे सामाजिक सम्मान में खोट देगा । सूर्य राजनीतिक सत्ता का कारक है, मारकेश सूर्य द्वारा राजकिय दंड भुगतना पड़ सकता है। उसी तरह बुध द्वारा बुद्धि के नाश, शुक्र द्वारा लक्ष्मी का नाश - सुख समृद्धि में कमी, तो चंद्र द्वारा माता को कष्ट तथा अशांत मन । इस प्रकार फल देखेगें। मंगल - शनि - राहु व केतु से दुर्घटना, रोग, बंधन, भूमि व वाहन, अग्नि से भय, शत्रु-भय, संतान-जीवन साथी या करीबी सम्बंधी की मृत्यु इत्यादि अशुभ फल उनकी दशा-अंर्तदशा के काल में पाये जाते है।

एक बात बहुत ही सही है कि मृत्यु से भी मृत्युतुल्य कष्ट का दु:ख कई गुना अधिक होता है। इसलिए अब हम जानेंगे कि मारकेश के प्रभाव से कैसे बचे!

सटिक उपाय तो यह है कि, संबंधित ग्रह के लिये सच्चे मन से पूजन करके क्षमा-याचना प्रार्थना करें। जानकार पंडित द्वारा ग्रह के स्वामी का विधिवत् पूजन-अर्चन करें। शास्त्र प्रमाण संख्या में ग्रहों के मंत्रो का, बीज-मंत्रों का जाप करने के पश्चात ग्रह संबंधित वस्तुओं का दान करें। या तीर्थस्थान में जल में प्रवाहित करें। इसके अलावा महामृत्युंजय मंत्र का जाप, नारायण मंत्र का जाप, सुन्दरकाण्ड के पाठ, रुद्राभिषेक इत्यादि से भी मारकेश ग्रह के अशुभ प्रभावों को दूर कर सकते है।

- वर्षा धीरज रावल

शुक्र पर्वत

यह पर्वत हाथ में दुसरे मंगल पर्वत के नीचे स्थित है। यह पर्वत को अंगुठे का तीसरा भाग भी कहते है। जो आयुष्य रेखा से अंगुठे की तरफ और दुसरे मंगल से लेकर मणीबंध तक होता है। यह पर्वत दुसरे पर्वतो से अधीक स्थान घेरता है।

शुक्र पर्वत हाथ में सभी पर्वतो से ऊंचा हो और उसका रंग गहरा, उभरा हुआ तथा लंबी रेखाओ के जाल से भरा हुआ हो तो वह विकसीत माना जाता है। शेष हाथ के बाहर न होने की दशा में यह पर्वत सामान्य होता है। इसमें शुक्र संबंधी गुण सामान्य होते है। यदि यह पर्वत बिलकुल भी उठा हुआ न हो पर्वत सपाट हो दिखने में सिथील हो तो उसे अपूर्ण शुक्र पर्वत आयुष्य रेखा अंगुठे से जीतनी दूर हो शुक्र पर्वत उतना विस्तारीत होता है। और जीतनी अंगुठे के नजदीक होती है, कहा जाता है शुक्र पर्वत उतना संकरा होता है। ऐसे जातक में कामेच्छा की कमी होती है।

शुक्र प्रधान जातक के हाथ में शुक्र पर्वत अच्छी स्थिती में अशुभ चिन्ह रहीत और गहरे रंग का होता है। शुक्र प्रधान जातक स्वस्थ प्रसन्नचीत्त उदार होते है। अपने संगी - साथियों के लिये अच्छे साबीत होते है। इनमें उदासी, पित्तविकार, चिडचिडापन, निस्तेजता या स्वार्थ नही होता है। उनकी जिंदादिली, जीवन्तता और सौन्दर्य विपरीत लिंगी व्यक्ति को आकर्षित करते है। इनमें शारीरीक जोश होता है। उसे सीधे सरल एवं सीमित दायरे में रखने के लिए अच्छी मस्तक रेखा, विवेक और बडे अंगुठे यानी दृढ संकल्प का रहना आवश्यक होता है। यह पर्वत नारी जाती के गुणो से भरा होता है।

पुरुष के हाथ में विकसीत शुक्र पर्वत चीकनी उंगलीया, नुकीले अग्रभाग और हाथ की कोमल त्वचा जातक के गुणो को स्त्रीयोचीत बनाते है। किसी -किसी हाथ में शुक्र पर्वत का अतिशय विकास को देखकर लगता है कि यह त्वचा को फाडकर बाहर आ जायेगा, ऐसा जातक शुक्र संबंधी सभी चीजों को जोश और उत्साह से चाहता है, अगर ऐसे पर्वत पर जाल का चिन्ह हो तो जातक अपने आप पर संयम नही रख पाता। समतल शुक्र पर्वत बहुत बडा न होने पर जातक फुल, संगीत, रुप, रंग, चित्रों में रुची रखता है परंतु कामवासना अधिक नही होती। अत्यधिक जालीयुक्त और उभरा हुआ पर्वत अत्यधिक कामवासना का प्रतीक है। जालीयुक्त शुक्रपर्वत यदि स्त्री के हाथ में हो तो पुरुष के प्रति उसका आकर्षण अधिक होता है और पुरुष के हाथ में हो तो उसकी प्रवृत्ति खतरनाक होती है। क्योकि उसमें जबरजस्त आकर्षण होता है। उसमें वह संयम नही होता जो स्त्रियों में होता है।

शुक्र प्रधान जातक मध्यम कदका सिर से पाँव तक उसका शारीरीक गठन मनमोहक लगता है। त्वचा कोमल, श्याम और एक तरह का आकर्षण लिये होती है। चेहरा गोल या अंडाकार होता है। आँख, नाक, गाल जबडा आदि उचीत उत्थान में होते है। जो उसकी खुबसुरती का द्विगुणीत करते है। स्नायुबद्ध हाथ और भी आकर्षक बनाते है। उनकी चाल में एक लचीलापन होता है जो उनको दुसरो से अलग दिखाता है। उनके भीतर की मानवीय दया, करुणा उन्हे लोकप्रिय बनाती है। उनका अंगुठा लचीला होता है और वह सभी को सहाय

करते है। अपने दुखी या निराशाजनक मित्रो का साथ वह कभी नही छोडता । सभी को सहाय करने का यह स्वभाव का कुछ लोग गलत इस्तेमाल भी करते है। उसे सच्चे प्रेम वाले लोग पसंद होते है। वह हर प्रकार के मनोरंजन, संगीत, नृत्य, दोस्ती-यारी, मौज-मस्ती में रुची रखता है। नीत-नवीन चीजे पसंद करता है।

शुक्र प्रधान जातक विवाह अवश्य करता है। और सामान्यत: कम आयु में ही जल्दी से परीपक्व हो जाने के कारण कम उम्र में ही बडे दिखने लगते है। विवाह का उनका आकर्षण शुद्ध चरित्र और स्वस्थ लोंगो के प्रति होता है। वह परिवार से प्यार करते है। शुक्रपधान जातक मंगल प्रधान जातक के प्रति ज्यादा आकर्षित होते है। इनके बच्चे होना स्वाभाविक है और वैवाहिक जीवन अच्छी तरह बीतता है। शुक्र प्रधान जातक कभी भी आत्महत्या नही करता क्योंकि उसे जीवन निराशाजनक नही लगता।

हाथ में शुक्र पर्वत का विस्थापन अंगुठे की तरफ हो तो जातक की इच्छाये उसकी भावुकता द्वारा नियंत्रित होती है। शुक्र पर्वत का विस्थापन मणिबंध की तरफ हो तो जातक संवेदनशील होता है। शुक्र पर्वत का विस्थापन चन्द्र पर्वत की ओर हो तो जातक कामुक होता है। शुक्र पर्वत का विस्थापन अंगुठे और प्रथम उंगली के बीच स्थान पर हो तो जातक का संगीत के प्रति लगाव होता है और यदि निम्नपर्वत का विस्थापन शुक्रपर्वत की ओर हो तो जातक में प्रेमपूर्ण भावनाओ के साथ सहनशक्ति भी होती है।

बुध और शुक्र समान रुप से विकसीत हो तो जातक में प्यार और बुद्धीमानी का उचीत संमिश्रण पाया जाता है। लेकिन अशुभ होने पर विवाह या अन्य मामलो में लेन-देन अधिक पसंद करता है। उच्च मंगल-शुक्रपर्वत ऐसे जातक सैनिक होते है। लेकिन अशुभ होने पर युद्ध और प्यार में बर्बरता पूर्ण जीत प्राप्त करता है। चंद्रमा और शुक्र पर्वत ऐसे जातक आदर्श प्रेमी होते है। अशुभ होने पर उनकी कल्पनाए कामुक होती है। शुक्र - निम्न पर्वत ऐसे जातक एकतरफा प्रेमी होते है। लेकिन अशुभ होने पर अपनी पत्नि या पति के प्रति अत्याचारी भी होते है।

शुक्र पधान जातक को ज्यादा बिमारीयों का सामना नही करना पडता यदि शुक्र बिगडा हो तो मुत्रपिंड, जननेन्द्रीय, गुप्तरोग संसर्गजन्य बिमारी, कमर की बिमारी, पाचनशक्ति, मधुमेह जैसे रोग संभव है।

जयेश वाघेला

"अष्टम की भाव यात्रा"

अष्टम भाव और अष्टमेश की कल्पना ही व्यक्ति के मन में अमंगल आशंकाएं उत्पन्न कर देती है। किन्तु सोचने वाली बात यह है, कि कुंडली के सभी बारह भावों में से कोई भी ना सिर्फ शुभ है, ना ही सिर्फ अशुभ । इसी प्रकार हमारे अष्टम भाव के भी कुछ विशिष्ट लाभ है। जैसे की अष्टम भाव हमारे जीवनसाथी के परिवार व उनका धन-सुख, वाणी इत्यादि दर्शाता है। इसलिये इस भाव को विवाहित स्त्री के लियें मांगल्य स्थान कहा जाता है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में सक्रिय व्यक्तियों के लिए भी यह भाव कोई वरदान से कम नहीं है क्योंकि यहाँ से गूढ़ विद्या, परालौकिक विज्ञान, तंत्र-मंत्र-योग आदि विद्याओं के बारे में जाना जा सकता है। अर्थात् बलवान अष्टम भाव व अष्टमेश की कृपा के बिना कोई भी व्यक्ति इन क्षेत्रों में महारत हासिल नहीं कर सकता। जो इन्सान सही मायने में आध्यात्मिक व संत प्रकृति के है उनकी कुंडली में अष्टम भाव, अष्टमेश के साथ-साथ शनि भी काफी बलवान स्थिति में होते है। इस भाव का कारक शनि है, जो कि वास्तविक रुप में एक सच्चा सन्यासी व तपस्वी ग्रह है। रहस्य, सन्यास, योग-ध्यान, तपस्या, त्याग, धैर्य व मानव-सेवा आदि विषय बिना शनिदेव की कृपा के किसी को भी प्राप्त हो ही नहीं सकते। इसके अलावा जो लोग खोज - अनुसंधान रीसर्च के क्षेत्र से जुडे हुए है उनके लिए भी अष्टम भाव एक खजाने के जीतना मूल्यवान होता है।

इससे यह प्रमाणित होता है कि ज्योतिष में कोई भाव या ग्रह बुरा नहीं होता, बल्कि सभी भाव व ग्रह की अपनी कुछ विशेषताएँ होती है। या युं कहिए कि कोई भी भाव या ग्रह हमारे पूर्व कर्मो के अनुसार ही हमें अच्छा या बुरा फल देने के लिए बाध्य होता है।

अष्टम भाव से हमें आयु का ज्ञान मिलता है। सो यह भाव निधन भाव के नाम से भी जाता है। जन्म कुंडली के जिस भाव का स्वामी अष्टम में स्थित हो, उस भाव संबंधित फल में हानि पहुँचती है। जैसे कि पंचमेश यदि अष्टम में स्थित हो तो संतान संबंधी कष्ट, पूर्व पुण्य में कमी लाभेश यदि यहाँ आ जाये तो जातक के लाभ में कटौती होगी, या फिर बड़े भाई - बहन या मित्र संबंधित समस्याएँ।

अष्टम भाव का मनुष्य की आयु से घनिष्ठ संबंध है। आयुष्य अवधि विचार में अष्टम भाव व अष्टमेश की अहम भूमिका मानी जाती है। इसके अतिरिक्त लग्न-लग्नेश, तृतीय भाव - तृतीयेश, चन्द्र, बृहस्पति व शनि जैसे ग्रह भी आयुनिर्णय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। किसी भी व्यक्ति की आयु उसके पूर्व व वर्तमान कर्मो से प्रभावित होती है। अर्थात् मनुष्य जैसा कर्म करके आता है, और इस जन्म में जैसे कर्म कर रहा है उसका प्रभाव मनुष्य की आयु पर निश्चित रुप से पड़ता ही है। इसलिए आयु का निर्णय सूक्ष्म रुप से करना कठिन बन जाता है। फिर भी उपर कहे गये भाव - भावेश व ग्रहों की कुंडली में बलवान स्थिति मनुष्य को दीर्घायु प्राप्त कराती है तो इससे विपरीत स्थिति में अल्पायु हो सकती है।

व्यक्ति की मृत्यु कहाँ किस प्रकार होगी इसका विचार भी अष्टम भाव से किया जाता है। यदि लग्नेश, पराक्रमेश, लाभेश व सूर्य अष्टम भाव - भावेश .... को प्रभावित करते हो तो मनुष्य आत्मघात कर लेता है। या फिर षष्टेश - लाभेश और मंगल ग्रह का प्रभाव अष्टम भाव और अष्टमेश पर पड़ता हो तो चोट, अकस्मात, आगजनी जैसी दुर्घटना में मृत्यु होती है। क्रुर और पाप ग्रहों का संबंध इस भाव व भावाधि पति के साथ होने से किसी दुर्घटना, चोट या आकस्मिक कष्ट के कारण मृत्यु को बताता है। इन स्थिति से विरोधी स्थिति हो,

मतबल शुभ ग्रहों का संबंध बनता हो तो मनुष्य शांतिपूर्ण अवस्था में मृत्यु पाता है।

वैसे तो अष्टम भाव को सर्वाधिक अशुभ भाव ही मानते है। इसके साथ - साथ छठा व बारहवाँ भाव भी अशुभ माने गए है। यदि अष्टम भाव का स्वामी छठे या बारहवे भाव में बैठा हो, और पाप ग्रहों से प्रभावित हो तो विपरीत राजयोग बनता है। जिसके फलस्वरुप जातक को बहुत सी धन-संपत्ति प्राप्त होती है। इसके पीछे का तर्क यह है कि जब दो अशुभ (नकारात्मक) चीजे मिलती है तो वह शुभ फलदायी हो जाती है।

अष्टम भाव सप्तम स्थान से द्वितीय है। अर्थात यह जीवनसाथी के परिवार, धन सुख के उपरांत उसकी वाणी भी दर्शाता है। यहाँ पाप ग्रहों के प्रभाव से जीवनसाथी की वाणी कठोर - कड़वी - कर्कश हो सकती है। तो शुभ ग्रह उसे मीत - मृदुभाषी दर्शायेंगे । ससुराल का पूर्ण सुख व ससुराल की धन - स्थिति अच्छी होती है।

अष्टम भाव गूढ़ रहस्य, खोज व अनुसंधान से संबंधित भाव है। अतिरिक्त, अष्टम से अष्टम होने के कारण तृतीय भाव भी इन सब के लिए जुडा जानेवाला भाव माना जाएगा। वैसे देखनेवाली बात यह भी है कि पाचवाँ भाव हमारी बुद्धिमत्ता का भाव है। जब किसी भी कुंडली में तृतीय-अष्टम स्थान व उनके स्वामी के साथ पंचम भाव व पंचमेश का संबंध बनता हो तो जातक महान आविष्कारक, गूढ़ खोजकर्ता व उमदा अनुसंधानकर्ता होता है। इनसे संलग्न ग्रहों के स्वभाव के तौर पर यह अनुसंधान भौतिक या आध्यात्मिक क्षेत्र से जुड़ा हो सकता है।

गंभीर व असाध्य व दीर्घकालीन रोगों का संबंध भी अष्टम भाव से ही देखा जाता है। अष्टम भाव स्थित ग्रह द्वारा ऐसे रोगों को पहचान सकते है।

- ☞ सूर्य द्वारा नेत्र, ह्रदय तथा हड्डीयों की बिमारी होती है।
- ☞ चन्द्र द्वारा टी.बी., रक्तविकार या मनोविकार का ज्ञान होता है।
- ☞ मंगल द्वारा रक्तचाप, गुप्त रोग और ऑपरेशन हो सकता है।
- ☞ बुध द्वारा साँस की तकलीफे, दमा, त्वचा रोग, वाणी व मस्तिष्क संबंधी रोग समझ सकते है।
- ☞ गुरु द्वारा मेदस्विता संबंधित रोग हो जाते है।
- ☞ शुक्र द्वारा पुरुषों में शुक्राणुओं की कमी होती है, काम शक्ति से जुडे रोग भी हो जाते है।
- ☞ शनि द्वारा स्नायु, वायु से होने वाली बिमारीयाँ । हॉलाकि यहाँ बैठा शनि जातक को दीर्घायु प्राप्त कराता है।
- ☞ राहु - केतु के साथ कैंसर जैसी गंभीर बिमारीयाँ जुडी है। वहाँ जल तत्व की राशि होती है तो

अष्टम के अशुभत्व की बातों में यह शुभत्व एक और भी है, कि यहाँ से वारसाई संपत्ति भी देखी जाती है। गुप्त धन की प्राप्ति भी यही भाव कराता है। ससुराल परिवार में सुनहरी धनसंपत्ति कितनी होगी वह भी तो अष्टम भाव ही हमें बताता है। तो ऐसे में अष्टम भाव को सिर्फ अशुभ भाव क्यों मांनेगें ।

संकलन कर्ता :

वर्षा धीरज रावल

"दिशाएँ"

North - East - South - West

धरती गोल है। हम प्लोट स्कवेयर (बंद वर्ग) या रेकटेंगल (आयत) चाहते है। दिशाऐं देखना जरुरी है। जगह का सेंटर बेलेन्स होना जरुरी है। घर का सेंटर बेलेन्सींग फेक्टर है। घर के बीच मध्य में खडे हो जाओं दिशायें समज आ जायेंगी पूर्व-पश्चिम - उत्तर-दक्षिण

नोर्थ-उत्तर दिशा अच्छी है। साऊथ-दक्षिण अच्छी नही है यह हमारी सोच है। शहरों में मल्टी स्टोरेज बिल्डिंग है तो ऊपर वालों की तथा नीचे वालों की परिस्थिति एक जैसी होगी ? या होनी चाहिए ?

यदि मकान मालिक की कुंडली मजबुत है, ग्रह सपोर्ट करते है, फेवरेबल है तो कोई तकलीफ नही होगी, सब लाभ मिल सकते है हर चीज पैसे से मिल सकती है, वक्त अच्छा हो तो सब अच्छा है North पैसा कमाने के अवसर देते है। वेल्थ है मगर NNE स्वास्थ्य खराब है तो मिले अवसर का सही उपयोग कर पायेंगे ? शरीर स्वस्थ नही है, खराब तबियत के कारण मन से भी सही नही होगें। इस प्रकार डिस्टर्ब हुआ मन NE गलत निर्णय लेकर सफल कैसे होगा ? शक्ति, समज मन के विचारो की ताकत से, दिमाग की शक्ति से सब ठीक होगा। ENE तब आनंद का सही अनुभव पाओगे, पैसे कमाने का अवसर, तबियत ठीक है, पैसे आयेंगे तो मन आनंद अनुभव करेगा और आगे बढ़ोगे। यदि यह दिशा खराब हुई तो, पानी या आग मिला तो मजा - आनंद उड जायेगा। यहाँ टोयलेट नही होना चाहिए । आनंद है तो हम समाज तथा कुदरत का भी आनंद लेंगे। मित्र बनायेंगे, सहयोग से हम जीवन को आगे बढायेंगे । सब कुछ ठीक है फिर स्ट्रेस क्यों आया ? ESE मित्र बने, संबंध बने तो किसी ने कुछ कर दिया, बुरा लगा, प्रशंसा से ज्यादा निंदा से स्ट्रेस आता है, तब खर्च होगा, ज्यादा कमाने की सोच आयेगी। धन खर्च भी करोगे तथा धन कमाने की भी चाह बढ़ेगी। SE यदि लिकवीड पैसे की तंगी है तो SE चेक करो क्या समस्या है। यदि आपको बिना काम किये पचास लाख मिल जाये तो ? शॉपिंग करोगे खर्च करने का विचार आता रहेगा आप केश रीच होगे तो आप अपनी मन पसंद वस्तुयें खरीदोगे। SSE पावर कोन्फिडन्स आयेगा। पैसे से ही कोन्फिडन्स आयेगा । पैसे खर्च करना है तथा दान करना है, दान करने से नाम बढ़ेगा । South नाम के साथ यश प्रसिद्धि मिलेगी। दुसरो से भी उत्तम प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त करोगे तथा दिखाओगे गाडी, डायमंड इत्यादि। फेमस होना हो तो खर्च करो। दक्षिण दिशा नाम देती है। नाम प्राप्त करना हो तो दान करना यानि धन खर्च करना जरुरी है। इसलिये हम दक्षिण दिशा को अपनाना नही चाहते । मगर मालूम न होने से दूर भागते है। यश प्रतिष्ठा प्राप्त होने पर अहंकार प्रवेश करता है। सही और सच्चे व्यक्ति को छोडकर गलत प्रशंसा करने वाले लोग पसंद आते है। S.S.W. खराब समय S.S.W. का बेडरुम पसंद करते है चाहते है परंतु घमंड - अहंकार के कारण बडों का आदर करना भूल जाते है। अपनी मनमानी चलाते है। जिंदगी हाथों से चली जाती दिखती है। तब हम हमारे अपनो से अपनी व्यथा सुनाके सहानुभूति प्राप्त करते है। तब सही संबंधो की पहचान होती है। जिंदगी में लात पडती है तब संबंध समजते है। दिल हलका करने के लिए बडों की या सही व्यक्ति की आवश्यकता होती है । हमें हमसे बडों का आदर करना चाहिए । अपमान नही करना चाहिए । तब बच्चे भी हमसे सीखकर हमारी इज्जत करेंगे तथा पैसे बचायेंगे। WSW सेवींग (बचत) तथा बच्चों की परवरिश और बच्चों का एज्युकेशन । सेवींग सिर्फ पैसो की नहीं ज्ञान की

भी होनी जरुरी है सही समय पर की हुई सही सेवींग इन्सान को उपयोग में आती है, यदि बच्चे पढ़ते नही है तो WSW चेक करो सेवींग होने के बाद व्यक्ति उससे फायदे की सोचता है । W/West Profit and Gain पश्चिम याने पीछे पूर्व याने आगे जब हम सामाजिक होंगे तो उनसे Profit and Gain का विचार भी करेंगे। बैंक बचत, प्रोपर्टी इनवेस्टमेन्ट के पेपर्स इत्यादि । अब जब नुकसान हुआ तो क्या होगा WNW डीप्रेशन। दुख मानसिक आघात प्रतिघात। तब हम किसकी सहायता लेंगे। मित्रो के पास जायेगें, मगर खाली हाथ भी लौटना पडता है निराशा मिलती है, अपने भी सहाय करने से कतराते है। तब NW बैंक लोन द्वारा सहयोग लेंगे मदत मिलेगी और फिर से एक बार आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे। जब नोर्मल हो गये तो हम प्रसिद्धी की तरफ गमन करेंगे । आप जब कोई प्रसिद्ध व्यक्ति के साथ चलते है तो आपके तरफ अन्यों का ध्यान आकर्षित होगा, केन्द्रित होगा और वही सुख आनंद प्राप्त करना चाहते है। इस प्रकार वास्तु कार्य चलता है।

वास्तु पंचतत्व रंग - दिशाएँ

पंचतत्व बैलेन्स होगा तो सफलता मिलती है।

जल तत्व	-	ब्लू रंग
वायु तत्व	-	हरा रंग
अग्नि तत्व	-	लाल रंग
पृथ्वी तत्व	-	पीला रंग
आकाश तत्व	-	सफेद - ब्लू - काला ग्रे)
सही रंग	-	सकारात्मकता देता है।
गलत रंग	-	नकारात्मकता देता है।

घर में रंग लगवाना है डार्क रंगो का उपयोग न करें। क्रीम, ऑफ व्हाईट रंगो का उपयोग करना चाहिए। रंगो का महत्व (प्रयोग निदान) बडा योगदान है।

NNW	जल तत्व - ब्लू रंग - यहाँ पीला या लाल रंग का उपयोग न करें।
NNE	पृथ्वी पानी सोख देता है। पानी आग को बुझा देता है।
NE	जलतत्व - क्रियेटर है तो आग - एनर्जी है।
ENE	वायु तत्व - ग्रीन - ब्लू
E	बैलेन्स न होगा तो स्थिरता नही आती।
ESE	जीवन में स्थिरता चाहते हो तो पृथ्वी साफ रखो।
SES	अग्नि तत्व - लाल रंग । पीला तथा ब्लू रंग न करें।
SSE	पींक, लाईट ग्रीन, अग्नि कोण में टोयलेट नही होना चाहिए-पैसे की तंगी कर्ज-बिमारियाँ आती है।
SSW	पृथ्वी तत्व - पीला रंग - संबंध बनाना
SW	ब्लू और ग्रीन रंग न करे पृथ्वी तत्व नाश हो सकता है।
WSW	टोयलेट नही होना चाहिए - रिलेशन खराब होते है। आपस में बिना कारण झगडे - बिमारियाँ जो जल्दी ठीक न हो।
W	आकाश तत्व - ग्रीन तथा लाल रंगो का उपयोग न करें ।
WNW NW	गलत निर्णय, डायवोर्स का परिणाम आ सकता है। पैसों की तंगी - धंधा ठप्प होना।

१६ दिशाओं की शक्तियाँ

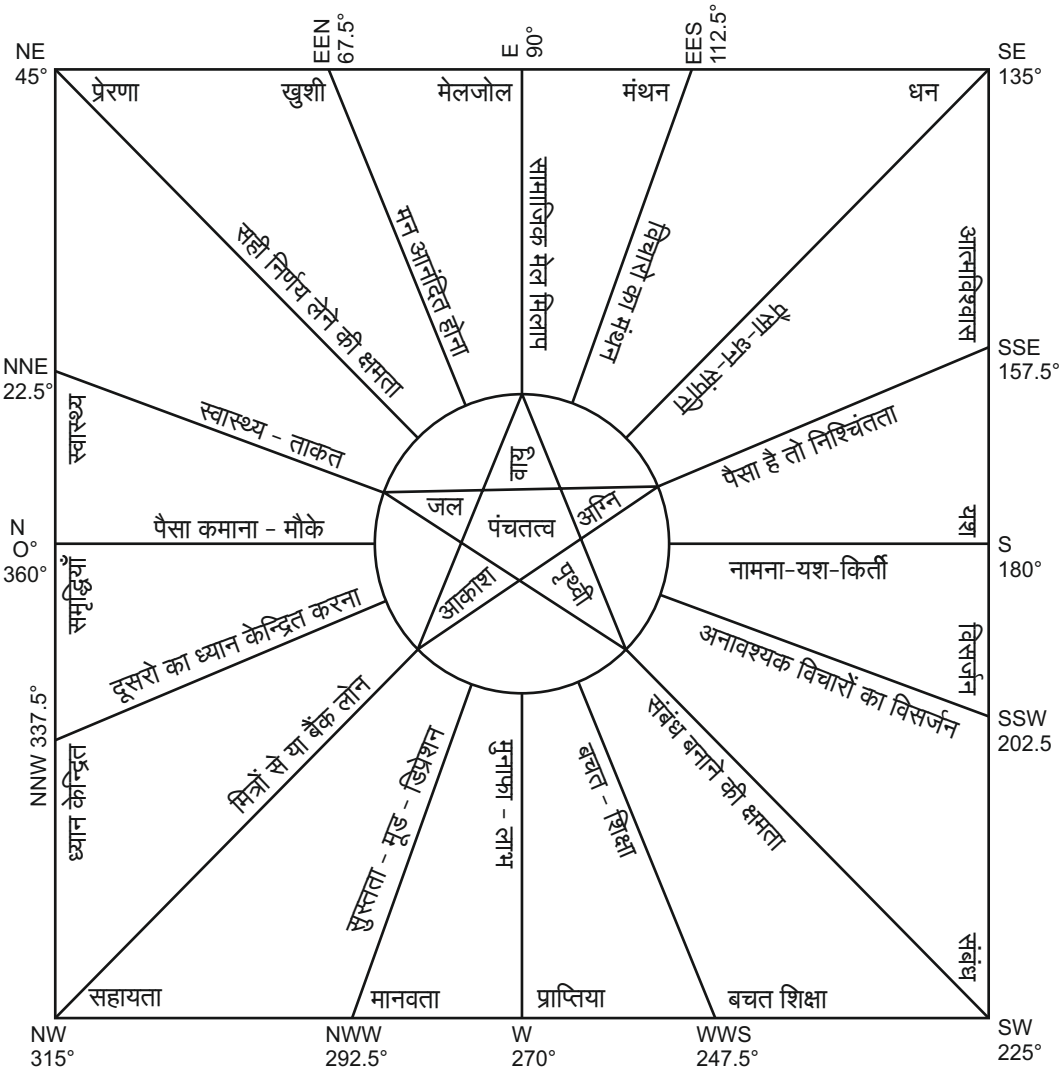

१६ दिशाओं

अंदाजित हर दिशा २२.५ डीग्री होती है।

अस्तु

प्रेमीला पंचाल

"मुहूर्त - शास्त्र"

द्वारचक्र

हर एक मनुष्य को अपना खुद का घर बनाने का सपना होता है। इस सपने को साकार करने के लिए और घर का शुभत्व प्राप्त करने के लिए मनुष्य को मूहूर्त शास्त्र का उपयोग करना चाहिए।

घर बनाने के लिए मुहूर्त शास्त्र में अलग-अलग चक्र का उपयोग बताया गया है। जैसे घर की नीव बनाने के लिए "राहु-चक्र", ग्रह प्रवेश या कुंभ स्थापन के लिए "कलश-चक्र", ग्रहारंभ के लिए "वृष-वास्तु चक्र" इत्यादि।

आज हम बात करेंगे चौखट लगाने के मुहूर्त की। दरवाजे की तीन बाजुऐ और एक दहलीज मिलकर चौखट बनती है। घर के मुख्य द्वार पे लकडी की चौखट लगवानी चाहिए।

लकडे की चौखट घर की सकारात्मकता (Positivity) को घर के बहार जाने नही देती और घर के बाहर की नकारात्मकता (Negativity) को अंदर आने नही देती। इसलिए हमें लकडे की चौखट लगानी चाहिए।

इसान (नेष्ट) ११,१२	पूर्व (श्रेष्ठ) १, २, ३, ४	आग्नेय (नेष्ट) ५-६
१७,१८ उत्तर १९,२० (श्रेष्ठ)	२४, २५, २६, २७ मध्य	१३, १४ दक्षिण १५, १६ (श्रेष्ठ)
९,१० वायव्य (नेष्ट)	२१, २२, २३ पश्चिम (नेष्ट)	७, ८ नैऋत्य (नेष्ट)

नक्षत्र का फल

- १ से ४ नक्षत्र पूर्व दिशा में है, जिसका फल लक्ष्मी प्राप्ती है।
- ५ से १२ नक्षत्र आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य व ईशान कोण में है, जिसका फल हानिकारक है।
- १३ से २० नक्षत्र दक्षिण और उत्तर दिशा में है, जिसका फल सुखदायक है।
- २१ से २३ नक्षत्र पश्चिम दिशा में है जो अशुभ फल देते है।
- २४ से २७ नक्षत्र मध्य भाग में है। जिसका फल सुख की प्राप्ति कराना है।

ऊपर का द्वारचक्र "श्री विश्वकर्मा" द्वारा कहा गया है। सूर्य के महानक्षत्र से चंद्र के नक्षत्र तक गिनती करे। जो अंक मिले उसका फल ऊपर देखे।

उदा. दिनांक ०२-०४-२०२२ को सूर्य महाराज पुष्य नक्षत्र में है और चन्द्रमा उत्तरा फाल्गुन में है। पुष्य से उत्तरा-फाल्गुन तक गिनती करके हमें १४ अंक मिले। जो द्वारचक्र में दक्षिण दिशा में है। जिसका फल शुभ एवं सुखदायक है। तो जातक को इस दिन चौखट रखने से शुभफल की प्राप्ति होगी।

इस तरह से हमें द्वारचक्र का उपयोग चौखट बिठाने के लिए करना है।

अस्तु हरि ॐ

- श्रीमती रुपल जे दमणिया

"बृहस्पति और सोना - Gold"

गुरु जिस जातक की कुंडली में अच्छे हो उस जातक को अच्छी विद्या, ख्याति, नाम, मान-सन्मान सभी मिलता है। सोना का बड़ा ही महत्व उनके जीवन में होता है। जिनके गुरु पाप ग्रहो के कारण खराब हालत में होते है उनकी विद्या में हमेशा रुकावट आता है। सोना घर में नही टिकता, कपडे बार-बार उघडते है। बिना बात के लांछन लगते है। सबसे ज्यादा हालात खराब होता है जब जातक को सोना गिरवी रखने की नौबत आती है। जातक को सबकुछ करना चाहिए पर सोना गिरवी नही रखना चाहिए । क्योकि सोना गिरवी रखने के ४० दिन के अंदर-अंदर १० मुसीबत और घेर लेती है। जिस भी जातक का सोना गिरवी पडा है या उसे मुसीबत में बेचना पडा, वो ये बात से जान सकते है। बेचने या गिरवी रखने के बाद कितनी और मुसीबतो का सामना करना पडा। इसलिए पुराना सोना बेचना पडे तो उसकी जगह नया खरीदकर लाना कभी भी बेचकर घर खाली हाथ नही आना चाहिए और जिनका गिरवी पडा है वो भी देखले गिरवी रखने के बाद बच्चो की पढ़ाई लिखाई में दिक्कत, सास की परेशानी, आये दिन घर में किसी ना किसी को दिक्कत होती चली जायेगी। धोखे से किसी का सोना चुरा लेना या अपने पास किसी ने गिरवी रखवाया हो और उसको वापिस देने पे नियत का खराब हो जाना तो भी कुंडली में गुरु कमजोर यानि निर्बल हो जाते है। जिस कारण बहुत सी परेशानिया झेलनी पडती है। जिस किसी का भी सोना गिरवी पडा हो बार-बार कोशिश करने के बाद भी छूटा नही पा रहे हो उनके लिए उपाय -

तांबे की गागर मे ४ किलो चावल, ४ किलो चने की दाल ढकनको पीतल का टांका लगवाकर तेज बहते पानी में जल प्रवाह करे जातक का सोना घर में ४० दिन के अंदर रास्ता बनकर आ जायेगा और उसके बाद भूलकर भी सोना गिरवी कभी ना रखना पडेगा। केसर का तिलक हमेशा जुबान, माथे और नाभि पर लगाये । बच्चो को बड़ो के चरण स्पर्श करने की आदत डलवाये इससे भी गुरु बलवान होते है।

- अस्तु -

संकलन Dr. Harillal Maalde

F.R.M.P., G.R.M.P., S.B.M.
Dispensing Chemist

“फलादेश में वक्री ग्रहो का महत्व”

पंचागमे वक्री ग्रहो राशी अंश कला से घटते दिखाये जाते है। सूर्य जब ग्रह ६, ७, ८ में आये तब वक्री समजना बुध या शुक्र सूर्य के समीप होने से सूर्य २ या १२ में आने से वक्री बनता है । सूर्य चंद्र अक्सर मार्गी रहते है और राहु केतु अक्सर वक्री चलते है।

गोचर में ग्रह वक्री रहने का समय

१) मंगल हर साल तकरीबन ८० दिन वक्री रहता है।

२) बुध साल में ३ से ४ बार वक्री रहता है।

३) गुरु साल में ३ से ४ महिने वक्री रहता है।

४) शुक्र साल में ४५ दिन वक्री रहता है।

५) शनी २½ साल में २ बार यानि १४० दिन वक्री रहता है।

६) हर्षल - नेपच्युन - प्लुटो साल में १ बार वक्री रहता है।

वक्री ग्रहो की दशा काल में उतार - चढ़ाव लाता है।

जन्म के वक्री ग्रह गोचर में जब वक्री होते है तब फल मिलता है। जन्म के समय का वक्री ग्रह, जन्म के पहले कितने दिन वक्री था वह देखे, जन्म होने पर वक्री कितने दिन हुए उसकी गिनती करे, जितने दिन हुए उतने साल का फल मिलता है।

गोचर में अशुभ वक्री ग्रह जन्म के अशुभ वक्री ग्रह पर से पसार होने पर बल अच्छा पर फल खराब देता है। गोचर में बुध वक्री होने पर कोई भी पेपर पर सही नहीं करने चाहिए बात-चीत में ध्यान रखना चाहिये।

शुक्र वक्री होने पर प्रेम बढ़ता है। मंगल वक्री होने पर अहम (EGO) बढ़ता है, अकस्मात होने का खतरा रहता है।

गुरु वक्री होने पर व्यक्ति आध्यात्मी बनता है। शनी वक्री होने पर व्यापार रोजगार में तकलीफ आती है। हर्षल वक्री होने पर स्वतंत्रता मिलती है। नेपच्युन वक्री होने पर समझदारी बढ़ती है। प्लुटो वक्री होने पर दुख की अनुभुती होती है।

नितीन भट्ट

"जीवन की सफलता का राज लग्न और लग्ने के पास"

ज्योतिष में कुंडली के प्रथम स्थान में "ल" दर्शाया जाता है जिसे हम "लग्न" कहते है। विचित्र बात है जब वर और वधू के दाम्पत्य जीवन में प्रवेश के प्रसंग को भी "लग्न" कहते है। लग्न का अर्थ क्या है यह जानने की जिज्ञासा मन में जागृत होती है। लग्न अर्थात जोडा जाना । ज्योतिष में प्रथम भाव को जातक के साथ संलग्न यानी की जोडा जाता है। इसलिये प्रथम भाव को "लग्न" कहते है।

जातक के जन्म के समय पूर्व में जो राशी उदित होती है उसे "लग्न" कहते है। यह वो क्षण है जब आत्मा शरीर का रुप धारण करके पहली बार पृथ्वी पर आती है। पूर्व जन्म में किये हुए कर्म के अनुसार ही तय किये गये समय पर जातक का जन्म होता है। जन्म का समय अवकाशीय ग्रहो और पूर्व जन्म में किये हुए कर्मो के फल स्वरुप वर्तमान जन्म जो अभी भुगतने आया है वह फल स्वरुप ग्रह की स्थिती होती है। यानि की जन्म लग्न ही जातक का पूर्व जन्म और वर्तमान जन्म को जोडने वाली कडी है इसलिये प्रथम भाव को "लग्न" कहते है। इसके शुक्ष्म अध्यन के लिये नौमांष ०-९ और षष्टियांश कु. डी६० चार्ट जो जातक के पूर्व जन्म को दर्शाती है। उसके आधार पर वर्तमान जन्म ग्रहों की स्थिती होती है।

सृष्टि पर होने वाले कार्य योजना बद्ध होते है। जातक का जो भी लग्न होगा उसके पीछे कुछ उद्देश रहेगा। प्रथम भाव एक ऐसा भाव है जो एक जीवन को जन्म दे रहा है। उस जीव की ऊर्जा कैसी होगी वो लग्न तय करेगा। लग्न से बडा कोई भाव नही । इस भाव की ऊर्जा निर्माण, पुरुषार्थ की है । यहाँ जातक स्वयंम् है। लग्न की ऊर्जा सर्वोत्तम है जो बारह भावो के फल को निश्चित करती है।

सामान्यत: यह मान्यता है मनुष्य खाली हाथ आया है खाली हाथ जायेगा परंतु मनुष्य अपने पूर्व जन्म के कर्मो के साथ आया था और वर्तमान कर्मो की पूजीं लेकर जायेगा ।

अभ्यासी व्यक्ति ज. कु का अभ्यास करते समय कुंडली की गहराई तक जाता है वो स्वाभाविक है। कुंडली में होने वाले योग, दशा, ग्रहो की गति, गोचर के ग्रह का भ्रमण चलित कु यह सब पर विशेष ध्यान देते है और वह आवश्यक भी है। परंतु जन्म कुंडली के जन्म लग्न पर अगर कम आंकलन किया अथवा कम ध्यान दिया तो फल-कथन में चूक होने की संभावना होती है। सचोट फलादेश के लिये बाकी सब योग के साथ लग्न और लग्नेश को भी इतना ही महत्व देना है। जिंदगी की सफलता और निस्फलता कुंडली के लग्न और लग्नेश की स्थिती पर अवलंबित है।

ज्योतिष विज्ञान एक महासागर है और उसके अभ्यासु व्यक्ति इस महासागर से मोती निकालने का सतत प्रयत्न करते है। सबको मोती मिले यह जरुरी नही पर अनुभव सबको मिलेगा वह तय है।

किसी भी कुंडली के लिये उसका प्रथम भाव और लग्नेश का Placement सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। क्योंकि लग्न और लग्नेश की स्थिती कुंडली की स्थिती बताने के लिये प्रयाप्त होती है अगर ये दोनों मजबूत होते है तो कुंडली में बनने वाले छोटे- बड़े राज-योग का फल जातक को मिलेगा और कुंडली बलवान मानी जायेगी। वही अगर पीडीत अवस्था रहेगी तो बडे - बडे राजयोग के फल भी मिलना मुश्किल होता है। कुंडली कमजोर हो जायेगी। कुंडली के बारह भाव जातक के अलग - अलग चीजों को दर्शाती है। केवल और केवल प्रथम भाव ही ऐसा भाव है जो जातक को दर्शाता है। इस तरह प्रथम भाव और भावेश कुंडली मे महत्व पूर्ण है।

"जन्म लग्न और लग्नेश का आंकलन ही जातक के जीवन की सफलता और निस्फलता का आधार है। आइये अब जानते है बलवान और निर्बल लग्न के आंकलन के लिये महत्व पूर्ण बाबते (यहाँ पर कुछ महत्वपूर्ण अंशको दर्शाने का प्रयास लिया है। इसके अलावा और भी शक्यतायें है।)

- ✧ लग्न और लग्नेश के अंश । अंश को मानव के शरीर के साथ जोडा गया है, जिसे हम अवस्था कहते है। युवा अवस्था यहाँ श्रेष्ठ मानी गई है।
- ✧ लग्न और उस पर बैठने वाले ग्रह और दोनों पर पडने वाली ग्रहो की दृष्टि यह शुभ ग्रह रहे तो कुंडली के बल में वृद्धि होगी । अगर पाप ग्रह युक्त कुंडली के बल को कम करता है।
- ✧ अगर लग्न और लग्नेश पापकर्तरी में होंगे तो कुंडली कमजोर पडती है।
- ✧ लग्नेश का केन्द्र और त्रिकोण में बैठना मित्र, उच्च का पाप प्रभाव से मुक्त कुंडली के बल में वृद्धि करता है।
- ✧ लग्नेश ६,८,१२ में स्थित हो अथवा इनके स्वामी के साथ बैठना और दृष्ट होना कुंडली के फल को कमजोर करना है।
- ✧ लग्नेश नीचे, अस्त, शस्त्रु क्षेत्री वक्री पाप ग्रह युक्त हो तो लग्न को निर्बल बनाता है।
- ✧ लग्नेश नवांश में और अष्टकवर्ग में भी उनकी स्थिती देखनी जरुरी है।

यहाँ प्रथम भाव और भावेश का कमजोर होना जीवन में ज्यादा उतार - चढ़ाव देता है। अधिक समस्या स्वास्थ संबंधित परेशानीयाँ, मान-हानि, यश न मिलना सूचित करता है।

लग्न-लग्नेश बलवान होने पर जातक सभी प्रकार से सुखी, यश, स्वस्थ, प्रसिद्ध, पूर्ण विकास और उन्नति देता है और कुंडली के कई दोषों को समाप्त करता है।

तन रुपी लग्नेश मन रुपी चन्द्रमा, आत्मविश्वास रुपी सूर्य अगर कुंडली में तीनो साथ दे तो विपरीत दशा के समय में भी व्यक्ति को उन्नति की ओर अग्रसर करता है। कोई भी विकट परिस्थिती में धैर्य बनाये रखता है और सफलता प्राप्त करता है। यहाँ लग्नेश जीवन उन्नत के लिये राह दिखायेगा।

चन्द्रमा मन को काबू कर एक स्थायी मार्ग देगा और सूर्य आत्मविश्वास देगा।

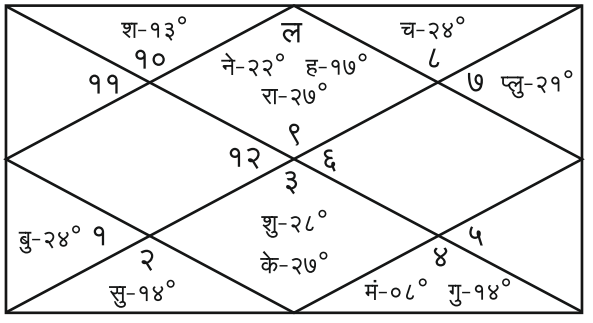

यह एक युवक की कुंडली है धनु लग्न है। लग्नेश गुरु आठवे स्थान में उच्च का होकर भी बल हीन है। मंगल के साथ बैठा है। मंगल व्ययेश है जो क्रुर ग्रह है जो लग्नेश को कमजोर कर रहा है। यहाँ लग्न भी निर्बल बन रहा है। लग्न में पाप ग्रह राहु, नेपच्युन, हर्षल बैठे है। उपरांत निर्बल शुक्र जो केतु युक्त है उसकी दृष्टि भी प्रथम भाव पर पड रही है। जो लग्न को अधिक निर्बल कर रही है।

लग्न और लग्नेश का निर्बल होना, यहाँ सातम भाव की कमजोरी यह सूचित करती है कि लग्न भी विलंब से तथा दाम्पत्य जीवन और भागीदारी में कठिनाईं बताता है।

सुखस्य मूलं धर्मः। सुख के मूल में धर्म है, धर्म परायणता से सुख प्राप्त होता है।

- प्रीति ठाकर

संदेश

ज्योतिषशास्त्र केवल वेदांग नही यह मुलतः विज्ञान है। जिसे प्रतिपादित करने की आवश्यकता नही है। वैज्ञानिक आधार पर दैनंदिन क्रियाकलापो में इसका प्रयोग किया जाना आवश्यक है। देश काल और पात्र के अनुरुप ज्योतिष के सिद्धांतो कि व्याख्या निरंतर होती रहनी चाहिए अन्यथा उससे भी रुके पानी की तरह सझाग आने लगेगी वैसे वर्तमान मे भी ऐसा हो रहा है। सहस्त्राब्दियो पूर्व हमारे ऋषियों द्वारा बिना उपकरणो के माध्यम से इस विषय के मूलाधार अर्थात खगोल का अध्ययन कर ज्योतिषशास्त्र को प्रतिपादित किया गया। यह सिद्धांत आजकी कसौटी पर भी खरे उतर रहे है, फिर भी समय के साथ उनमे बदलाव की आवश्यकता महसूस हो रही है।

इन्ही सब बातो को ध्यान में रखते हुए वर्ष २००९ में आचार्य अशोकजी के नेतृत्व में वैदिक ज्योतिष संस्थान (रजि.) मुंबई का गठन किया गया । संस्था का मूल उद्देश ज्योतिष के प्रति जनमानस में फैली भ्रांतियो का निवारण एवं इसके आधारो की पुनः स्थापना कर ज्योतिष के बिखरे हुए सिक्को को एकत्र कर जनमानस के लिये सुलभ बनाना, पंचांगो का एकीकरण, एक ही कुंडली की अलग-अलग गणना तथा भिन्न - भिन्न मतो के बजाय एक ही गणना तथा मत होना चाहिए। उपरोक्त विचार को ध्यान मे रखते हुए प्रारंभ में प्रथम वर्ष वैदिक ज्योतिष प्रवेश, वैदिक हस्तरेखा विज्ञाता द्वितीय वर्ष - वैदिक ज्योर्तिभूषण, तृतिय वर्ष वैदिक ज्योतिष मार्तंड चतुर्थ वर्ष स्वाध्याय एवम् प्रथमवर्ष वैदिकवास्तु प्रवेश, द्वितीय वर्ष वैदिक वास्तुभूषण, वैदिक स्वरज्ञान ज्ञाता, प्रारंभ में स्नातक एवं तत्पश्चात स्नातकोत्तर स्तर पर ज्योतिष अध्यन प्रारंभ किया गया है।

मुझे खुशी है कि वैदिक ज्योतिष संस्थान मुंबई द्वारा संस्था के संयुक्त तत्वाधाम में आयोजित गुरु पुर्णिमा महोत्सव की पहल की गई जिससे जनमानस में ज्योतिष को लेकर फैल रही भ्रांतियो को दूर किया जा सके ।

मै इसकी सफलता हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूँ।

- डॉ. हरीलाल मालदे

–: અંગ્રેજી મીડીયમમાં બાળકોને મૂક્યા હોય તો આ વાંચો :–

મેં ભારતદેશના ઉત્તરથી દક્ષિણ અને પૂર્વથી પશ્ચિમના વિસ્તીર્ણ વિસ્તારોનું પરિભ્રમણ કર્યું છે. આ દેશ એટલો સમૃધ્ધ છે અને તેની પ્રજાનું નૈતિક મૂલ્યોનું સ્તર એટલું ઉન્નત છે કે મેં દેશમાં કોઈ નાગરિક એવો ન જોયો કે જે ભિક્ષુક હોય કેજે ચોર હોય. હું નથી ધારતો કે આવા ઉત્કૃષ્ટ નૈતિક મૂલ્યવાન દેશને આપણે ક્યારેય પણ જીતી શકીએ. સિવાય કે આ દેશની આધ્યાત્મિકતા અને સાંસ્કૃતિક વારસો કે જે રાષ્ટ્રની કરોડરજ્જુ સમાન છે તેનો આપણે નાશ કરી શકીએ.

અને આથી હું દરખાસ્ત કરું છું કે આપણે તેની ગૌરવસમી સદીઓ પુરાણી પ્રાચીન શિક્ષણ પ્રણાલી અને તેની સાંસ્કૃતિક પ્રથાઓને મૂળથી જ બદલીએ કે જેના પરિણામે હિન્દુસ્તાનીઓ માનતા થાય કે જે કંઈ વિદેશી છે અને ઇંગ્લીશ છે તે તેમના કરતા વિશેષ સારું છે અને મહાન છે અને આ કારણે તેઓ પોતાની ઓળખ તેમજ આત્મગૌરવ ગુમાવશે. પોતાનું નિજી સાંસ્કૃતિક સ્વરૂપ ગુમાવશે અને તેઓ એવા નાગરિકો બની જશે કે '' જેવા આપણે તેમને ઈચ્છીએ છીએ.'' (કાળ અંગ્રેજો–સ્વૈચ્છિક ગુલામો)

એ ખરા અર્થમાં આપણા આધિપત્યવાળું ગુલામ રાષ્ટ્ર બની રહેશે.

આપણને ઇતિહાસ(કે ઉઠા) એવો ભણાવાયો કે આપણે અંધકાર યુગમાં જીવતા હતા.

કલકત્તા, ઓક્ટોબર ૧૨, ૧૮૩૬

પરમ પ્રિય પિતાજી !

આપણી શાળાઓ ખૂબ સરસ રીતે ઉન્નતિ કરી રહી છે. હિન્દુઓ પર આ શિક્ષણનો પ્રભાવ અદ્‌ભુત થયો છે. અંગ્રેજી શિક્ષણ મેળવ્યું છે એવો એક પણ હિન્દુ એવો નથી જે સાચા હૃદયથી પોતાના ધર્મને અનુસરતો હોય. થોડા એવા છે જે નીતિના વિચારથી પોતાને હિન્દુ કહે છે અને કેટલાક ખ્રિસ્તી બની રહ્યા છે. એ મારો વિશ્વાસ છે કે જો આપણી આવી જ શૈક્ષણિક નીતિ ચાલતી રહેશે તો અહીંની સન્માનિત જાતિઓમાં આગામી ત્રીસ વર્ષોમાં એક પણ એવો બંગાળી બાકી નહીં બચ્યો હોય જે મૂર્તિપૂજક હોય. આ એમને ખ્રિસ્તી બનાવ્યા વિના જ થઈ જશે. એમના ધર્મમાં હસ્તક્ષેપ કરવાની આવશ્યકતા પણ નહીં રહે. આપણું (અંગ્રેજી) જ્ઞાન અને વિચારશીલતા વધારવાથી એ કામ આપમેળે થઈ જશે. આવી સંભાવના પરમને અત્યંત પ્રસન્નતા થઈ રહી છે.

વાંચવા પછી તમારું સ્વાભિમાન શું કહે છે ?

આપનો પ્રિય
ટી. બી. મેકોલ

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC JYOTISH PRAVESH

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
1	PRAGNA A SHETH	DISTINCTION	79
2	ABHISHEK SHARMA	DISTINCTION	72
3	CHETAN B GADHIYA	DISTINCTION	71
4	BHAMINI I BHATT	FIRST	66
5	UMASANKAR H PANDYA	FIRST	66
6	TRISHA R SINGH	FIRST	65
7	BINITA P THAKKAR	FIRST	65
8	DHARMAVEER T GUPTA	FIRST	65
9	PRASHANT D BADHEKA	FIRST	64
10	TRUPTI H PAREKH	FIRST	63
11	NEETA M KHATRI	FIRST	63
12	NIYANTA D KATELIA	FIRST	63
13	AYUSHI B SHAH	FIRST	62
14	RAKESH KUMAR SINGH	FIRST	62
15	VARSHA H JOSHI	FIRST	62
16	DHARMESSH DESAI	FIRST	61
17	BHAGWANDAS N MEHTA	SECOND	59
18	KSHITIJ B DAVE	SECOND	58
19	MEENA V ANAND	SECOND	57
20	SANKET A GARG	SECOND	56
21	TUSHAR R JOSHI	SECOND	56
22	RAMESH M ASHAR	SECOND	55
23	MAITRI R KENIA	SECOND	54
24	JINESH M SHAH	SECOND	53
25	KUDDIMAL J MODI	SECOND	53
26	RAKESH K PANCHAL	SECOND	51
27	INDIRA M GUPTA	SECOND	50
28	PRAFUL P SETA	SECOND	50
29	YOGESH U KHATRI	SECOND	50
30	VINOD B SODHA	SECOND	49
31	GEETA M BHUTA	SECOND	48

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC HAST REKHA VIGNYATA

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
1	TRISHA R SINGH	DISTINCTION	93
2	KSHITIJ B DAVE	DISTINCTION	90
3	SANKET A GARG	DISTINCTION	85
4	DHARMAVEER T GUPTA	DISTINCTION	82
5	CHETAN B GADHIYA	DISTINCTION	81
6	AYUSHI B SHAH	DISTINCTION	80
7	VARSHA H JOSHI	DISTINCTION	80
8	DHARMESSH DESAI	DISTINCTION	77
9	ABHISHEK SHARMA	DISTINCTION	75
10	KUDIMAL J MODI	DISTINCTION	70
11	PRAFUL P SETA	FIRST	68
12	PRAGNA A SHETH	FIRST	68
13	NIYANTA D KATELIA	FIRST	67
14	NEETA M KHATRI	FIRST	66
15	VINOD B SODHA	FIRST	64
16	PRASHANT D BADHEKA	FIRST	64
17	JINESH M SHAH	SECOND	59
18	MAITRI R KENIA	SECOND	58
19	RAKESH K PANCHAL	SECOND	58
20	TRUPTI H PAREKH	SECOND	57
21	BHAMINI I BHATT	SECOND	56
22	INDIRA M GUPTA	SECOND	52
23	TUSHAR R JOSHI	SECOND	48
24	MEENA V ANAND	SECOND	45
25	RAKESH KUMAR SINGH	SECOND	40
26	UMASANKAR H PANDYA	SECOND	37
27	BHAGWANDAS N MEHTA	SECOND	36
28	GEETA M BHUTA	SECOND	36
29	RAMESH M ASHAR	SECOND	36

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC VASTU PRAVESH

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
1	NIYANTA D KATELIA	DISTINCTION	76
2	NIKITA D KARANI	DISTINCTION	71
3	BHAMINI I BHATT	FIRST	68
4	TRISHA R SINGH	FIRST	65
5	DHARMAVEER T GUPTA	FIRST	65
6	RAKESH K PANCHAL	FIRST	64
7	VIBHA K SHETH	FIRST	64
8	PRAGNA A SHETH	FIRST	63
9	MAITRI R KENIA	FIRST	62
10	TUSHAR R JOSHI	FIRST	62
11	MANISHA B SHARMA	SECOND	58
12	SANKET A GARG	SECOND	58
13	YOGESH U KHATRI	SECOND	58
14	AYUSHI B SHAH	SECOND	56
15	HARSHITA B PATEL	SECOND	56
16	NEETA M KHATRI	SECOND	56
17	KSHITIJ B DAVE	SECOND	56
18	DHARMESSH DESAI	SECOND	53
19	ABHISHEK J SHARMA	SECOND	53
20	TEJASH P PANCHAL	SECOND	51
21	VINOD B SODHA	SECOND	51
22	KUDDIMAL J MODI	SECOND	50
23	PRASHANT D BADHEKA	SECOND	50
24	GEETA M BHUTA	SECOND	48
25	INDIRA M GUPTA	SECOND	46

શ્રદ્ધા અને વિશ્વાસ સાથે પોતાના કાર્યને વળગી રહેનારને વહેલી તકે કે મોડી, સુંદર તક સાંપડે જ છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC JYOTISH BHUSHAN

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
1	GAURAV U SHARMA	DISTINCTION	72
2	REETA N MEHTA	DISTINCTION	71
3	PIYUSH K SAVLA	FIRST	69
4	ASWINI A PRABHU	FIRST	69
5	MOHIT SINGH	FIRST	68
6	SHILPA S PARAB	FIRST	68
7	ANAND P UPADHYAY	FIRST	67
8	YAGNESH V SHAH	FIRST	67
9	MITAL A KAMDAR	FIRST	66
10	ANAND V SONI	FIRST	66
11	MENA G MERIA	FIRST	65
12	NITIN D DAVE	FIRST	65
13	SHREYA J SHAH	FIRST	64
14	UNNATI B SHAH	FIRST	64
15	DEEPA A JOSHI	FIRST	63
16	MEGHA A SHAH	FIRST	62
17	GOVARDHAN T KULLAI	FIRST	61
18	RAJ R MAKHIJA	FIRST	61
19	SUNIL G DANDULIYA	FIRST	61
20	VIKASH MISHRA	FIRST	61
21	NAVNITKUMAR H RANA	SECOND	59
22	NITIN P VORA	SECOND	59
23	PREMAL P SONI	SECOND	59
24	BHAVESH J NATHWANI	SECOND	58
25	PRAKASH M SHINDE	SECOND	58
26	SARITA P SHARMA	SECOND	57
27	SASHIKANT P KURANI	SECOND	57
28	SANDEEP NEEMA	SECOND	56
29	SONAL D OZA	SECOND	56
30	BHAVIKA R JOSHI	SECOND	55
31	HETAL M MODI	SECOND	53
32	HIMANSHU R OZA	SECOND	52
33	MANISH D CHHEDA	SECOND	52
34	NAYNA H MAKWANA	SECOND	52
35	HITENDRA A PARMAR	SECOND	51

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC JYOTISH BHUSHAN

No.	Name of the Student	Class	Marks
36	NILESH J RUPANI	SECOND	50
37	DIVAYA V PARIKH	SECOND	48
38	URVI S SATAYUGA	SECOND	48
39	SANJAY A BHATT	SECOND	48
40	DIPIKA V PANCHAL	SECOND	46
41	NISHA M GADA	SECOND	46

VEDIC VASTU BHUSHAN

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	HIMANSHU R OZA	DISTINCTION	77
2	SHILPA S PARAB	DISTINCTION	74
3	DEEPA A JOSHI	DISTINCTION	73
4	MITAL A KAMDAR	DISTINCTION	71
5	ANAND V SONI	DISTINCTION	71
6	MENA G MERIA	DISTINCTION	71
7	NISHA M GADA	DISTINCTION	71
8	RESHMA M GANGWANI	FIRST	66
9	SHREYA J SHAH	FIRST	63
10	VIKASH MISHRA	FIRST	63
11	AVANI V JOSHI	FIRST	62
12	NITIN P VORA	FIRST	62
13	UNNATI B SHAH	FIRST	61
14	SANJAY A BHATT	SECOND	54
15	ANAND P UPADHYAY	SECOND	53
16	NAVNITKUMAR H RANA	SECOND	51
17	MOHIT SINGH	SECOND	47
18	ASWINI A PRABHU	SECOND	45
19	RAJ R MAKHIJA	SECOND	43
20	SANDEEP NEEMA	SECOND	41

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC SWARGYAN GNYATA

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
1	UNNATI B SHAH	DISTINCTION	93
2	GAURAV U SHARMA	DISTINCTION	86
3	MENA G MERIA	DISTINCTION	86
4	NAYNA H MAKWANA	DISTINCTION	86
5	SHILPA S PARAB	DISTINCTION	86
6	NAVNITKUMAR H RANA	DISTINCTION	85
7	SHREYA J SHAH	DISTINCTION	85
8	REETA N MEHTA	DISTINCTION	84
9	ANAND P UPADHYAY	DISTINCTION	84
10	VIKASH MISHRA	DISTINCTION	83
11	ANAND V SONI	DISTINCTION	82
12	PARU J PUROHIT	DISTINCTION	82
13	SONAL D OZA	DISTINCTION	82
14	HIMANSHU R OZA	DISTINCTION	81
15	RAJ R MAKHIJA	DISTINCTION	81
16	SUNIL G DANDULIYA	DISTINCTION	81
17	RESHMA M GANGWANI	DISTINCTION	80
18	DIVAYA V PARIKH	DISTINCTION	77
19	PREMAL P SONI	DISTINCTION	77
20	ASWINI A PRABHU	DISTINCTION	76
21	YAGNESH V SHAH	DISTINCTION	76
22	DIPIKA V PANCHAL	DISTINCTION	73
23	MITAL A KAMDAR	DISTINCTION	73
24	MOHIT SINGH	DISTINCTION	73
25	MEGHA A SHAH	DISTINCTION	72
26	SASHIKANT P KURANI	DISTINCTION	72
27	AVANI V JOSHI	DISTINCTION	71
28	SANJAY A BHATT	DISTINCTION	71
29	BHAVIKA R JOSHI	FIRST	69
30	DEEPA A JOSHI	FIRST	69
31	PRAKASH M SHINDE	FIRST	67
32	SARITA P SHARMA	FIRST	67
33	VISHAKHA C VADIA	FIRST	67
34	GOVARDHAN T KULLAI	FIRST	64

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC SWARGYAN GNYATA

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
35	NISHA M GADA	FIRST	62
36	HITNDRA A PARMAR	SECOND	56
37	BHAVESH J NATHWANI	SECOND	52
38	NITIN P VORA	SECOND	46

VEDIC JYOTISH MARTAND

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
1	JIGISHA H MANDALYA	DISTINCTION	71
2	KALPESH J SURATHI	DISTINCTION	70
3	KAMLESH J SURATHI	SECOND	68
4	KAMLESH V SHAH	SECOND	67
5	HEENA N PANCHAL	SECOND	66
6	DILIP N GALA	SECOND	65
7	UADAY N NAYAK	SECOND	63
8	BHAKTI K NANDOLA	SECOND	62
9	SURENDER A RATTI	SECOND	58
10	NILESH M GHELANI	SECOND	56
11	YASHWANT O PATITRODA	SECOND	55
12	DARSHANA A SHAH	SECOND	53
13	URVI S SATAYUGA	SECOND	40

"आकाशगंगा"

ज्योतिष शास्त्र और अंध विश्वास है या क्या है ? और ये विज्ञान है तो क्या और कैसे ? राशिया और नक्षत्र बताये ? ऐसे प्रश्नों के उत्तर जीवन में देने वाला कोई मिला तो वो है वैदिक संस्थान आचार्य श्री अशोकजी ।

संयोग वश उनसे भेंट हुई और हमने उनकी जनवरी २०२२ की ज्योतिष कक्षा जो कि निशुल्क है में प्रवेश ले लिया। कक्षा के प्रथम दिवस पर ही आचार्य जी ने हमे आकाश दर्शन के बारे में बताया।

जिसका हमें आतुरता से इंतजार था, आचार्यजी और उनके साथ से सभी शिक्षकों से हमें कुछ तो आकाश के बारे में जानकारी दी जा चुकी थी, फिर भी प्रत्यक्ष देखने का अनुभव तो जरुरी था, आखिर लगभग ४ महिने बाद इंतजार की घड़ियां ९ अप्रैल को समाप्त हुई और हम बस द्वारा आकाश दर्शन के लिए निकले। गाते गुनगुनाते अंताक्षरी खेलते हुए मस्ती भरे सफर के साथ रास्ते में जलाराम काठियावाडी के यहाँ स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया, शाम ५ बजे हम धरमपुर गुजरात के विल्सन हिल रिसॉर्ट पहुंचे। सभी इंतजाम हमारी कल्पना के से कहीं ज्यादा ही उत्तम था वहाँ पहुचते ही हम सब के लिए चाय और नाश्ता तैयार था। चाय पीने के बाद छत पर जा कर देखा तो आचार्य जी की पूरी टीम हमारे आकाश दर्शन की तैयारी में जुटी थी। बड़ी-बड़ी दूरबीन प्रोजेक्टर स्क्रीन लैपटॉप और साथ हमारे बैठने के लिए दरी तथा कुर्सी लगा दी गई।

शाम करीब ६.३० को सबसे पहले चांद देखने के लिए सभी उत्सुकता के साथ लाइन में लग गए।

वहाँ हमें पहले ब्रह्मांड के बारे में और आकाशगंगा के बारे में विस्तार से जानकारी दी और साथ ही ध्रुव तारा, सप्तर्षि मंडल, राशियों का उदय चिन्ह ग्रह स्क्रीन पर दिखाते हुए समझाया । उसके पश्चात् दूरबीन से भी दिखाया गया ये सब कुछ बहुत ही सुंदर अदभुत था।

रात्रि ८ बजे फिर भोजन के लिए सब नीचे एकत्रित हुए और स्वादिष्ट भोजन के बाद फिर से आकाश दर्शन को विस्तार दिया गया।

सभी का सामंजस्य सराहनीय था। समुचित आचार्यजी तो गागर में सागर है। पूरे कार्यक्रम को सुंदरता से क्रियान्वित किया गया और समय सारणी के अनुसार आगे बढ़ते रहे।

सोचने और विचार करने के साथ आश्चर्य की बात तो ये है कि कैस हमारे ऋषि मुनियों द्वारा राशिया तथा नक्षत्रों की आकृति ताराओं के झुंड से किस तरह बनायी होगी ? उन्हें ग्रहो की राशियों की नक्षत्रों की इतनी विस्तृत जानकारी थी जबकि दूरबीन का तो अविष्कार हुआ भी नही था। उन्हे ना सिर्फ नाम ही पता थे ब्लकि उनकी आकृति गति उनका प्रभाव सभी बारीकियों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया।

ये सभी ग्रह नक्षत्र व ग्रहों की आभा का मानव जीवन पर प्रभाव पड़ता है और मानव के जीवन में आने वाले समय के बारे में जानकारी निकाल पाना कितना बडा विज्ञान है, काल की गणना गणित के माध्यम से कितनी सटीक की गई है ना अचंभित होने की बात साथ ही गर्व की भी, हम उस देश के वासी है जहाँ के ज्ञानी पूरी दुनिया से हजारो वर्ष आगे है जो खोज आज नासा कर रहा है तो वो हमारे यहाँ पहले ही की जा चुकी है।

इस आकाश दर्शन ने मेरे अन्दर का अंधियारे को दूर कर मुझे प्रकाश में खड़ा किया है।

सच में भाग्यवान हूँ तभी मुझे वैदिक ज्योतिष संस्थान से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाक्या ।
चक्षुरुमीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

- शारदा आर. कुमावत

तारा दर्शन की झलकियाँ

तारा दर्शन की झलकियाँ